रामपटल



श्रीः

रामपटल

शतशः ग्रन्थोंके संशोधक संपादक और अनुवादक मुरादाबादस्थ ब्रजरत्न-भट्टाचार्य्य द्वारा

संशोधित संपादित और हिन्दीभाषामें अनुवादित

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण- सन् १९९७ सम्वत् २०५४

मूल्य १० रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Bombay-400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीः

भूमिका

★

पाठकगण ! ! !

हिन्दुधर्मके ऊपर अनेक आक्रमण हो चुकनेपरभी अपनी दृढताके कारण वह अभीतक अचलरूपसे संसारमें वर्तमान है और अनन्तकालपर्य्यन्त ऐसेही वर्त्तमान रहेगा इसका एक मात्र कारण यही है कि हमारे यहां आस्तिकताका साम्राज्य वर्त्तमान है, हम लोग ईश्वरमें जैसी दृढ आस्था रखते हैं अथवा जैसी भक्तिश्रद्धासे उसकी अर्चा पूजा करते है उसका अन्यत्र निपट अभाव है। हिन्दुओंके समस्त कार्य भगवदाराधनासे खूब ओत प्रोत रहते हैं। उसी आराधना और उपासना संबंधी इस "रामपटलका" अनुवाद हम उपासक पुजारियोंकी भेंट करते हैं आशा है इसके द्वारा उन्हें बहुत कुछ सहायता मिलेगी !

उपासना और पूजासंबंधी अन्यान्य पद्धतियेंभी भाषानुवादसहित सम्मूल्य वितरण करनेके लिये प्रस्तुत हैं।

संपादक और अनुवादक—
व्रजरत्नभट्टाचार्य्य पट्टवरगंज.
मुरादाबाद, यू. पी.

४ पितृपक्ष १९७१
८ सितंबर १९१४
भौमवार,

श्रीः

श्रीरामपटल

व्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृत भाषानुवादसहित

श्रीमते रामानंदाय नमः

आसनमंत्रः

*ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ १ ॥

ॐ हे पृथिवी! तूने सब लोकोंको अपने ऊपर धारण किया है, हे देवी! विष्णुभगवान् तुम्हें धारण करते हैं,

---

*'ओं' ब्रह्मा विष्णु महेश्वरका वाचक होनेके कारण मंगलसूचक है। और मंत्रोंके प्रथम 'ओं' का प्रयोग करनेहीसे उनकी पूर्ति समझी जाती है इसीसे 'ओं' सर्वत्र प्रयुक्त होता है।

अतः हे देवी ! तुम मुझे धारण करो और आसन-शुद्धिको संपादन करो। यह आसनका मन्त्र है ॥१॥

पृथ्वीपादस्पर्शमंत्रः

ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमंडले ॥
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥२॥

हे देवी ! सागर तुम्हारी मेखलाके स्थानमें कल्पित हुए हैं, पर्वत तुम्हारे स्तनोंका मण्डल बने हैं, एवं तुम साक्षात् विष्णुभगवान्‌की पत्नी हो, हम तुम्हें अभिवादन करते हैं अतएव तुम हमारे चरणस्पर्शको क्षमा करो। यह भूमिके ऊपर चरण स्पर्श करनेका मन्त्र है ॥ २ ॥

जलग्रहणमंत्रः

ॐ सलिलस्य मुखं दृष्ट्वा विष्णुरूपं नमोऽस्तुते ॥
क्रियार्थमहं गृह्णामि आपो देव्यः पुनंतुमाम् ॥३॥

जलका अवलोकन कर कहे कि—तुम साक्षात् विष्णु स्वरूप हो अतएव हम तुम्हें नमस्कार करते हैं, नित्य क्रिया करनेके लिये हम तुम्हें ग्रहण करते हैं, सुतराम् हे जलदेवता ! तुम हमें पवित्र करो यह जल ग्रहण करनेका मन्त्र है ॥ ३ ॥

मूत्रोत्सर्जनमंत्रः

ॐ धरे त्वदाश्रितं सर्वं त्वं चैव केशवाश्रिता ॥
मूत्रं त्यजाम्यहं देवि क्षमस्व तत्क्षमावति ॥ ४ ॥

हे धरणी ! सब चर और अचर तुम्हारेही आश्रयमें रहते हैं, और तुम श्रीमन्नारायणका आश्रय करके रहती हो, हे देवि ! हम तुम्हारे ऊपर मूत्रोत्सर्ग करते हैं, तुम क्षमावती हो अतएव हमारे इस कार्यको क्षमा करो। यह मूत्रोत्सर्ग करनेका मन्त्र है ॥ ४ ॥

ततो बहिर्गच्छेत् नैर्ऋत्यां दिशि गत्वा सूर्यं दक्षिणे कृत्वा वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य यज्ञोपवीतं दक्षिणकर्णे निधाय ॥

इसके अनन्तर बाहर जाय, नैर्ऋत्यदिशामें जाकर सूर्यको दाहिनी ओर करके शिरको वस्त्रसे लपेटे और यज्ञोपवीतको दाहिने कानके ऊपर रक्खे ॥

मलमूत्रोत्सर्जनमंत्रः

ॐ तेषां तेषां तु देवानां भूतप्रेतपिशाचकाः ॥
मलमूत्रं मनुष्याणां मम दोषो न दीयताम् ॥५॥

जैसे सब देवताओंके भूत प्रेत पिशाच हैं इसी प्रकार मनुष्योंका मल मूत्र होता है, इसीसे मुझे कोई दोष नहीं लगाना चाहिये। यह मल मूत्र परित्याग करनेका मन्त्र है ॥ ५ ॥

द्वितीयमलमूत्रोत्सर्जनमंत्रः

ॐ उत्तिष्ठंतु सुराः सर्वे यक्षराक्षसकिन्नराः ॥
पिशाचा गुह्यकाश्चैव मलमूत्रं करोम्यहम् ॥ ६ ॥

सब देवता, यक्ष राक्षस और किन्नर, पिशाच और गुह्यक ये सब उठें, अब मैं मलमूत्रका परित्याग करता हूं। यह मलमूत्र परित्याग करनेका दूसरा मन्त्र है ॥ ६ ॥

इति मंत्रेण तालत्रयं कृत्वा शौचसमये सुरादीनामुच्चाटनं कुर्यात् ॥

इस मंत्रको पढनेके तीन वार ताली बजाके शौचके समय देवता आदिका उच्चाटन करे।

गुदाशुद्धिमंत्रः

ॐ गुदं चावस्करद्वारं पवित्रैर्निर्मलैर्जलैः ॥ धौतं करतलेनैव गुदाशौचं भवेद्ध्रुवम् ॥ ७ ॥

गुदा मलद्वार है अतएव पवित्र और निर्मल जलके द्वारा हाथसे इसे प्रक्षालन करते हैं, ऐसा करनेसे अवश्यही गुदाकी शुद्धि हो जाती है। यह गुदा शुद्धिका मन्त्र है ॥ ७ ॥

मृत्तिकाहरणमंत्रः

येन त्वां खनति ब्रह्मा येन त्वां रुद्रकेशवौ ॥
तेन त्वाहं खनिष्यामि शुद्ध्यर्थं करपादयोः ॥८॥

जिस कारणसे ब्रह्मा रुद्र और विष्णु तुझे खोदते हैं उसी निमित्तसे हाथ पैरोंकी शुद्धिके लिये मैं भी तुझे खोदता हूं । यह मृत्तिका(मिट्टी)लानेका मन्त्र है॥८॥

मृत्तिकाशुद्धिमंत्रः

अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुंधरे ॥
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया पूर्वसंचितम् ॥ ९ ॥

हे वसुन्धरे ! तुम्हारे ऊपर अश्व और रथ चलतेहैं, विष्णुभगवान्की चहलपहलभी तुम्हारे ऊपर रहती हैसो हे मृत्तिके ! तुम मेरे उन पापोंको दूर करो जिनका मैंने पूर्व जन्ममें संचय किया है । यह मृत्तिकाशुद्धिका मन्त्र है ॥ ९ ॥

मृत्तिकानियमः

एका लिंगे गुदे पंच तथा वामकरे दश ॥
उभयोः सप्त दातव्या चरणौ च त्रिभिस्त्रिभिः ॥

इति गृहस्थस्य प्रमाणम् ब्रह्मचारिणां द्विगुणम् ॥ वानप्रस्थस्य त्रिगुणम् ॥ संन्यासिनां रामभक्तानां चतुर्गुणम् ॥ १० ॥

एकके लिंग, पांचसे गुदा, दश बायें हाथ, और दोनोंकी सातसे एवं तीन २से चरणोंकी शुद्धि करे यह प्रमाण गृहस्थके लिये है ! ब्रह्मचारियोंके लिये इससे दूना; वानप्रस्थको तिगुना और संन्यासियों एवं राम भक्तोंके लिये चौगुना प्रमाण है । यह मृत्तिकाका नियम है ॥ १० ॥

तुंबिकापात्रशुद्धिमंत्रः

ॐ जलं दहति पापानि कमंडल्वायतनं भवेत् ॥
गंगातोयसमं नित्यं जलपात्रं च शुद्ध्यति ॥११॥

जल सब पापोंको भस्म करता है, उसका स्थान कमंडलुको माना गया है, इसीसे सब जल गंगाजलके

समान होते हैं ऐसा कहनेसे जलपात्रकी शुद्धि होती है यह तुंबिकापात्रकी शुद्धिका मंत्र है ॥ ११ ॥

काष्ठपात्रशुद्धिमंत्रः

ॐ जले चाग्निः स्थले चाग्निरग्निश्च वायुमंडले ॥
त्रिभिरग्निप्रकाशैश्च काष्ठपात्रं च शुद्ध्यति ॥१२॥

जल स्थल और वायुमंडल इन सबहीमें अग्नि है, अतएव तीन प्रकारके अग्निके प्रकाशसे काष्ठ-पात्रकी शुद्धि हो जाती है । यह काष्ठपात्रकी शुद्धिका मन्त्र है ॥ १२ ॥

दंतकाष्ठच्छेदनमंत्रः

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च ॥
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥१३॥

आयु बल यश तेज सन्तान (अथवा प्रजा) धन ब्रह्मज्ञान और बुद्धि हे वनस्पति ! ये सब तुम हमें प्रदान करो । यह दँतोन काटनेका मंत्र है ॥ १३ ॥

दंतकाष्ठयोग्यवृक्षाः

खदिरश्च करंजश्च कदंबश्च वटस्तथा ॥
चिंचिणी वेणुपादश्च आम्रो निंबस्तथैव च ॥
अपामार्गश्च बिल्वश्च अर्कश्चोदुंबरस्तथा ॥
एते प्रशस्ताः कथिताः दंतधावनकर्मणि ॥१४॥

खैर, करंज (कंजुआ),कदंब, बड, चिंचणी, वेणु पाद, आम्र, नीम ॥१॥ अपामार्ग (चिरचिटा),बेल, आक और गूलर दँतोनके लिये इन वृक्षोंका काष्ठ शुभ है । इति दन्तकाष्ठविधि समाप्त ॥ १४ ॥

दंतधावनमंत्रः

ॐ दंतरूपमधोगं च दंतधावनमुत्फलम् ।
कुर्वंति च त्रयो देवा मम दोषो न दीयताम्॥१५॥

दांतका स्वरूप अधोगत है, दन्तधावन उसका फल है,ब्रह्मा विष्णु महेश ये तीनोंही देवता दन्तधावन करते हैं, अतएव मुझे भी कुछ दोष न देना चाहिये । यह दन्तधावनका मन्त्र है ॥ १५ ॥

दंतधावनदिशा

दक्षिणे पश्चिमे यो वै दंतधावनमाचरेत् ॥
तस्य स्नान फलं नास्ति तदन्यस्यां समाचरेत्॥१॥

दक्षिण अथवा पश्चिमकी ओर जो व्यक्ति दँतोन करता है उसे स्नानका फल प्राप्त नहीं होता अतएव अन्य किसी दिशामें बैठके दँतोन करनी चाहिये ॥१॥

स्नानविधिः

प्रवाहे सन्मुखे स्नानं तडागे रविसन्मुखे ॥
कूपे वाप्यां तथा पूर्वं गृहे स्नानं तथोत्तरम् ॥१॥

अब स्नानकी विधि कहते हैं। नदीमें प्रवाहके सन्मुख, तालाबमें सूर्यके सन्मुख, कूप या बावडीमें पूर्वकी ओर घरमें उत्तरकी ओर स्नान करना चाहिये ॥ १ ॥

प्रवाहे शतधेनुश्च तडागे दशधेनुकम् ॥
कूपे वाप्यामेकधेनुर्गृहेस्नानं तु केवलम् ॥२॥

प्रवाहमें स्नान करनेसे शतगोदान, तालावमें दस गोदान, कूप और बावडीमें स्नान करनेमें एक गोदान करनेका फल उपलब्ध होता है; घरमें केवल स्नानही स्नान है ॥ २ ॥

आचम्य षडंगन्यासं कुर्यात् । ॐ वाक् ॐ वाक् । ॐ प्राणः ॐ प्राणः। ॐ चक्षुः ॐ चक्षुः। इति प्राणायाममलापकर्षणं स्नानं च कृत्वा नाभिमात्रे जले स्थित्वा ॥ ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः इत्याचमनमंत्रः ॥

आचमन करके षडंगन्यास करे—"ॐ वाक्—ॐ चक्षुः"से मूलोक्त अंगोंका स्पर्श करे । इस विधिसे प्राणायाम और मलको दूर करनेवाला स्नान करके नाभिमात्र जलमें स्थित होके—"ॐ विष्णुः ३" से आचमन करे ॥

संकल्पः

आद्यपुराणपुरुषोत्तमाय ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ

अथ श्रीब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविशंतितमे कलियुगे जंबुद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्ते अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकतीर्थे अमुकक्षेत्रे अमुकगोत्रः अमुकदासः श्रीसीताराम-कैंकर्यसिद्ध्यर्थं प्रातः स्नानमहं करिष्ये ॥

सबके आदिभूत पुराणपुरुषोत्तम परब्रह्मको नमस्कार है । "ॐ अथ श्रीब्रह्मणो--करिष्ये" से मूलोक्त विधिसे संकल्प करे । संकल्प समाप्त ॥

शिखामंत्रः

ॐ ब्रह्मनामसहस्रेण शिवनामशतेन च ॥
विष्णोर्नामसहस्रेण शिखाबंधं करोम्यहम् ॥१६॥

ब्रह्मा और विष्णुके सहस्र नाम तथा शिवके शतनामसे मैं शिखाबन्धन करता हूं । यह शिखा बांधनेका मन्त्र है ॥ १६ ॥

शिखामुक्तिमंत्रः

ॐ ब्रह्मपुत्री शिखाया च ब्रह्मदंडा तपस्विनी ॥
सर्व्वदेवनमस्कारं शिखामुक्ति करोम्यहम् ॥१७॥

जो शिखा ब्रह्मपुत्री, ब्रह्मदंडस्वरूपिणी और तपस्विनी है, मैं सब देवताओंको नमस्कार करके उसी शिखाको खोलता हूं । यह शिखा खोलनेका मन्त्र है ॥ १७ ॥

शिखाप्रमाणविधिः

ॐस्नाने संध्याजपे होमेऽध्ययने देवतार्चने ॥
शिखाग्रंथिं विना कुर्याच्छूद्र एव न संशयः ॥१॥
भोजने शयने संगे तथा मार्गेपिसर्पिणे ॥ व्यवहारे तथा शौचे शिखाग्रंथिं विवर्ज्जयेत् ॥ १८ ॥

स्नान संध्या जप होम अध्ययन (पाठ) देवपूजा इन कर्मोंको शिखामें विना ग्रंथिबंधन करे करनेसे करनेवाला निस्संदेह शूद्रके समान होता है ॥१॥ भोजन

शयन संगम मार्ग गमन व्यवहार और शौचमें शिखाकी ग्रंथिको त्याग देना चाहिये। यह शिखाके प्रमाणकी विधि है॥ १८॥

जले प्रणवात्मकं त्रिकोणं कृत्वाष्टदलं मंडलं विलिख्य सूर्य्यमंडलादंकुशमुद्रया सर्वतीर्थान्यावाह्य ॥

जलमें ॐकारात्मक त्रिकोण बनाके अष्टदल मंडल लिखकर सूर्यमंडलसे अंकुशमुद्राके द्वारा समस्त तीर्थोंका आवाहन करना चाहिये।

स्नानमंत्रः

ॐ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥
ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥२॥
ॐ नमो भगवते रघुनंदनाय रक्षोघ्नविशारदाय

मधुरप्रसन्नवदनायामिततेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः ॥ १९ ॥

हे सूर्य! अखिल ब्रह्माण्डमें जितने तीर्थ हैं आपकी किरणोंने उन सबका स्पर्श किया है,हे दिवाकर! उसी सत्यसे मुझे सब तीर्थ प्रदान करिये ॥१॥ हे गंगे, यमुने और गोदावरि! सरस्वती और नर्मदे, सिन्धु और कावेरी तुम सब इस जलमें अपनी सान्निधि स्वीकार करो ॥२॥ यह स्नानका मन्त्र हैं।

जो ऐश्वर्यशाली हैं, राक्षसोंका विनाश करनेमें जो निपुण हैं, जिनका मुख प्रसन्न और मधुर है, जिनका तेज अपार है, जो बलिष्ठ और साक्षात् विष्णुस्वरूपहैं ऐसे रघुनन्दन रामचन्द्रजीकोहम प्रणाम करते हैं॥१९॥

अघमर्षणम्।

ॐ क्लीं तेजसे रां तारकब्रह्म स्वाहा इति मंत्रेण

वामहस्तेनाच्छादितं दक्षिणहस्तस्थं जलं सकृद्भिमंत्र्य दक्षिणनासारंध्रेणाघ्राय तज्जलं शरीरांतर्गतं सर्वकलुषमाक्षालितं तत् कृष्णवर्णं ध्यात्वा वामनाड्यानिर्गतं पुनर्हस्तमागतमिति विभाव्य वामभागे कल्पितायां वज्रशिलायां ॐ रः अस्त्राय फट् इति मंत्रेण गाढमास्फालयेत् ॥२०॥

"ॐ क्लीं—ब्रह्मस्वाहा" इस मंत्रसे दाहिने हाथमें रक्खे हुए जलको बायें हाथसे आच्छादन करके एकबार अभिमंत्रित कर नासिकाके दाहिने नथनेसे सूंघके, उस जलको शरीरके भीतरका धुला हुआ संपूर्ण पाप जान उसके कृष्णवर्णका ध्यान करके, एवं वाम नाडीसे निकला हुआ और वाम हाथमें रक्खा हुआ विचारकर, वाम भागमें कल्पना की हुई वज्रशिलाके ऊपर "ॐरः अस्त्राय फट्" इस मंत्रसे खूब अच्छी तरह आस्फालन करे। यह अघमर्षण है॥२०॥

ततो हस्तौ प्रक्षाल्याचम्य ॥ सूर्यं मंडले इष्टदेवस्य स्वरूपं ध्यायेत् ॥ अमुकदेवताय नमः ॥ इति तद्गायत्र्या त्रिवारं जलं निक्षिपेत् ततो गायत्रीं जपेत् ॥

फिर हाथ धोकर आचमन करे । सूर्यमण्डलमें इष्टदेवके स्वरूपका ध्यान करे । उस देवताका नाम लेकर "अमुक देवाय नमः" यों कहकर उसी देवताकी गायत्रीसे तीन वार जल निक्षेप करे, फिर गायत्रीका जप करना चाहिये ।

रामगायत्री

ॐ दाशरथाय विद्महे॥ सीतावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः ॥ प्रचोदयात् ॥

दशरथकुमारको हम जानते हैं, सीताके प्रियका ध्यान करते हैं, वेही राम हमें सत्कर्म करनेमें प्रवृत्त करें । यह रामगायत्री है ।

करन्यासः

ॐ दाशरथाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ विद्महे तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ सीतावल्लभाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ तन्नो रामः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात्करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

"ॐ दाशरथाय—करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः"से मूलमें लिखे हुए अंगोंका स्पर्श करके करन्यास करना चाहिये करन्यास समाप्त ।

हृदयादिन्यासः

ॐ दाशरथाय हृदयाय नमः ॥ ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ सीतावल्लभाय शिखायै वषट्॥ ॐ धीमहि कवचाय हुं ॥ ॐ तन्नो रामः नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ॥

"ॐ दाशरथाय—अस्त्राय फट्"से मूलमें लिखे अनुसार उल्लिखित स्थानोंका स्पर्श करके हृदयादिन्यास करे ।

रामगायत्रीजपः

ॐ ह्रीं ह्रीं रां रामाय नमः ॥

रामगायत्रीमंत्रजपः॥ॐ क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः॥

फिर"ॐ ह्रीं ह्रीं रां रामाय नमः" का जप करे । यह रामगायत्रीका जप है ।

करन्यासः

ॐ क्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

अब रामगायत्रीमंत्रका जप वर्णित होता है । "ॐ क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः" उच्चारणपूर्वक "ॐ

क्लां—करतलकरपृष्ठाभ्यां नमःसे मूलमें लिखे अनुसार करन्यास करे । करन्यास समाप्त ॥

हृदयादिन्यासः

ॐ क्लां हृदयाय नमः ॥ ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा ॐ क्लूं शिखायै वषट् ॥ ॐ क्लैं कवचाय हुं ॥ ॐ क्लौं नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ क्लः अस्त्राय फट् ॥

फिर "ॐ क्लां हृदयाय—अस्त्राय फट्" मूलमें लिखे अनुसार हृदयादिन्यास करे । हृदयादिन्यास समाप्त । रामगायत्रीमंत्रका जप समाप्त ॥

मंत्राक्षरन्यासः

ॐ ब्रह्मरंध्रे रां नमः ॥ ॐ भ्रुवोर्मध्ये रां नमः॥ ॐ हृदि मां नमः ॥ ॐ नाभौ यं नमः ॥ ॐ लिंगे नं नमः ॥ ॐ पादयोः मं नमः ॥

तत्पश्चात् मंत्रन्यास करे "ॐ ब्रह्मरंध्रे—नमः"से मूललिखित अङ्गस्पर्श पूर्वक अक्षरन्यास करें। अक्षरन्यास समाप्त ॥

ध्यानम्

ॐ नीलाम्भोधरकांतिकायमनिशं वीरासनाध्यासितम् ॥ मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि ॥ सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवम् ॥ पश्यंतं मुकुटांगदादिविविधैः कल्पोज्ज्वलांगं भजे ॥

अब ध्यान वर्णित होता है । नीलमेघके समान जिनकी काया है, जो नित्यही वीरासनसे विराजमान रहते हैं, जो ज्ञानमयी मुद्राको धारण करते हैंजिनका अपर हस्तकमल जानुके ऊपर स्थित है, हाथमेंकमल लिये बिज्जुछटासी सीता जिनके वामभागमेंविराजमान है, जो मुकुट और बाजु आदि विविध भांतिकेआभूषण धारण करते हैं, एवं जिनका अङ्ग उज्ज्वलहै ऐसे राम चन्द्रको हम भजते हैं । ध्यान समाप्त ॥

चतुः संप्रदायस्य धामक्षेत्राणि

ॐ श्रीरामानन्दगुरुप्रमाणअयोध्याधर्मशाला । चित्रकूटसुखविलास । गोदावरीप्रदक्षिणा । क्षेत्रधनुषतीर्थ । रामनाथधाम । अच्युतगोत्र । शुक्लवर्ण सीताइष्ट । जानकी मन्त्र । ॐ क्लीं रैं रैं रैं जानकीनाथाय नमः इति द्वादशाक्षरमन्त्रः ॥ ॐ राम- उपासी उपासनामन्त्रः ॐ क्लीं रां रामाय नमः । इत्यष्टाक्षरमन्त्रः ॥ अथ युगलमन्त्रः ॐ क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सीतावल्लभाय नमः ॥ इति द्वादशाक्षरमन्त्रः॥ राघवानंदमहाप्रसाद इति मन्त्रः ॥

अब चारों संप्रदायके धाम और क्षेत्रोंका उल्लेख करते हैं—"रामानंद गुरुप्रमाण अयोध्या धर्मशाला राघवानंद महाप्रसाद" पर्य्यंत मूलहीमें स्पष्ट है ।

ॐ अन्नं ब्रह्म रसो विष्णुर्भोक्ता देवो महेश्वरः॥
एवं ध्यात्वा तु यो भुंक्ते अन्नदोषैर्न लिप्यते ॥

अन्न ब्रह्मस्वरूप है, रस विष्णु है. साक्षात् महादेवजी उसके भोक्ता हैं ऐसा ध्यान करके जो भोजन करता है वह अन्नके दोषोंसे लिप्त नहीं होता ।

रामतारकमन्त्रः

ॐ क्लीं तेजसे रां तारकब्रह्म स्वाहा इति द्वादशाक्षरमन्त्रः अनंतशाखा । सामीप्यमुक्ति । श्रवणद्वार । लक्ष्मीआचार्य्य । विश्वामित्र ऋषिः । योगवासिष्ठमुनिः । हनुमान् देवता । हनुमानमन्त्रः । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः । इति षडक्षरमन्त्रः । रामगायत्री । ऋग्वेद । हरिनाम अहार । विष्वक्सेनपार्षद । कमलादेवी । सूर्य्यवंशी । शुद्धसिंहासन । किरीटमुकुट । धनुषबाण । ऊर्ध्वपुंड्रतिलक । श्रीसंप्रदा । वैजयंतीमाला ॥ इति श्रीरामानंदवैष्णवाः ॥ १ ॥

अब रामतारक मंत्र कथित होता है—"ॐ क्लीं

तेजसे—वैजयंतीमाला" पर्य्यन्त मूलमेंही सब स्पष्ट है ।
इति श्रीरामानन्द वैष्णव समाप्त ॥ १ ॥

संस्कृतेऽपि

शतानंद उवाच ॥ अथ वक्ष्ये श्रीगुरूणां संप्रदायचतुष्टयम् ॥ तत्रापि प्रथमं श्रीमद्रामानुजगुरोः क्रमात् ॥ १ ॥ रामानुजगुरुः किंवा ध्यानस्थानं किमुच्यते ॥ किं क्षेत्रं किं च तीर्थं स्यात् किं धामाथ प्रकीर्तितम् ॥२॥ तथा सुखविलासः कः किमिष्टं का उपासना ॥ का दीक्षाः किञ्च नाम स्यान्मन्त्रं किंवा ऋषिश्च कः ॥ ३ ॥ देवता का च कथिता वैष्णवाः क इहोदिताः ॥ का शिखा किं च गोत्रं स्यात्का शाखा वसनं तु किम् ॥४॥ मेखला अंचला कंथा वाथ सूत्रं कथं भवेत् ॥ किमासनं च कः संगः को गुणश्च प्रकीर्तितः ॥५॥ का भिक्षा किंच पात्रं स्यात्का मुद्रा तिलकं कथम् ॥ आनंदः कश्च कः शंखः का माला किंच तंत्रकम् ॥ ६ ॥ किं

चातिगुह्यं का भक्तिः किं गुह्यं कथितं बुधैः ॥ प्रश्नराशीनामुत्तरं कथय प्रभो ॥ ७ ॥

संस्कृतमेंभी लिखा है शतानन्दजी बोले—अबश्रीगुरुओंके चारों संप्रदायका वर्णन करते हैं उनमेंभी प्रथम श्रीमद्रामानुज गुरुवरका क्रमसे वर्णन करते हैं ॥१॥ श्रीरामानुज गुरु हैं, उनके ध्यानका स्थान क्या कहाता है, उनका क्षेत्र तीर्थ और धाम कौनसा किया गयाहै ॥२॥ सुखविलास क्या है ? इष्ट और उपासना क्या है, दीक्षा कौनसी है ? नाम मंत्र और ऋषि कौन है ! ॥३॥ देवता कौन है, और, वैष्णव कौन कहाते हैं ! शिखा गोत्र शाखा और वसन क्या है ॥ ४ ॥ मेखला अञ्चल कंथाऔर सूत्र क्या२ होते हैं, आसन संग और गुण कौनसा कहाता है ॥५॥ क्या भिक्षा है पात्र क्या होता है, मुद्रा और तिलक कौनसे होते हैं, आनंद, माला, शंख और तंत्र कौनशा होता है॥६॥ अतीव गुप्त भक्ति और

गोपनीय किसको विद्वानोंने वर्णन किया है, हेप्रभो! इन प्रश्नोंकी राशिका उत्तर आप दीजिये ॥ ७ ॥

सनत्कुमार उवाच ॥ ध्यानस्थानं च शिरसि सहस्रदलपंकजे॥ अयोध्यानगरी क्षेत्रं धनुःकोटिश्च तीर्थकम् ॥ ८॥ रामनाथाख्यकं धाम बहुभिः परिकीर्तितम् ॥ तथा सुखविलासः स्याच्चित्रकूटाख्यपर्वतम् ॥ ९ ॥ इष्टं विदेहतनया रघुनाथ उपासना ॥ ऋग्वेदस्तु च वेदः स्यान्नाम श्रीहरिनामकम् ॥१०॥ षडक्षरं महामंत्रं कथितं रामतारकम् ॥ योगवाशिष्ठकं नाम ऋषिश्च कौशिको मुनिः ॥ ११ ॥ देवता हनुमान् प्रोक्तो वैष्णवश्च श्रीवैष्णवः ॥ शिखा वै स्वर्गनगरी गोत्रं चाच्युत गोत्रकम् ॥ १२ ॥ शाखा अनंतशाखा च वसनं शुक्लमेव च ॥ कौपीनं च द्वयं कुर्यात् प्रत्येकं द्वादशांगुलम् ॥ १३ ॥ मेखलाः कथिता ह्यत्र तिस्रो वै मुंजमेखला ॥ अंचलाशुक्ल

वस्त्रं स्याद्धस्तद्वयप्रमाणतः ॥१४॥ पंचहस्तप्रमाणं च समडोरकशोभिनी ॥ प्रशस्ता कथिता कंथा शुक्लवस्त्रं चतुष्टयम् ॥ १५ ॥ सार्द्धहस्तद्वयं कुर्यान्नामसूत्रैः सितैर्गुणैः ॥ आसनं कथितं चात्र शुद्धकृष्णाजिनासनम् ॥ १६ ॥ विष्णूपासकसंगश्च संगः सत्वगुणो गुणः॥ तथा भिक्षा शुक्लभिक्षापात्रं चालांबुपात्रकम् ॥ १७ ॥ अत्र मुद्रा तप्तमुद्राशंखचक्रगदादिकम् ॥ ऊर्ध्वं पुंड्रं च तिलकं द्वादशांगेषु विन्यसेत् ॥ १८ ॥ आनंदो विजयानंदः शंखश्चोदधिसंभवः ॥ मालाचक्रांकतुलस्याः शतमष्टोत्तरं तथा ॥ १९ ॥ अगस्त्यसंहितातंत्रे रामतत्वं तु गोपितम्॥ भक्तिस्तत्पादसेवात्र मनोवाक्कायकर्मभिः ॥ २० ॥ गुह्यं श्रीवैष्णवानां च चरणामृतसेवनम् ॥ एवं यः संप्रदायी स्यात्स हि वैष्णव उच्यते ॥ २१ ॥ इति द्वितीय धामक्षेत्रम् ॥ २ ॥

सनत्कुमारजी बोले—ध्यानका स्थान तो शिरमें सहस्रदल कमलमें है, अयोध्यानगरी क्षेत्र और धनुषकोटि तीर्थ है ॥ ८ ॥ बहुतसे ऋषियोंने रामनाथको धाम कीर्तन किया है, चित्रकूटपर्वत सुखविलास है ॥ ९ ॥ जनकदुलारी इष्ट, श्रीरघुनाथ, उपासना, ऋग्वेद, वेद और हरिनाम नाम है ॥ १०॥ अथ च राम तारकमहामंत्र छः अक्षरका कथित हुआ है, योगिवाशिष्ठ ऋषि एवं विश्वामित्र मुनि ॥ ११ ॥ हनुमान् देवता और श्रीवैष्णव वैष्णव है स्वर्गनगरी शिखा है, अच्युत गोत्र ॥ १२ ॥ अनन्त शाखा शाखा है शुक्ल वस्त्र होता है, बारह २ अंगुलकी दो कोपीन बनानी चाहिये ॥१३॥ मंजुकी तीन मेखला मेखला है; दो हाथ लंबा श्वेत वस्त्र अञ्चल है ॥१४॥ पांच हांथ लम्बी और पांच डोरोंसे शोभायमान चार श्वेत वस्त्रोंकी सुन्दर कन्था होती है ॥ १५ ॥ श्वेत सूत्रोंके द्वारा ढाई हाथका नाप करना

चाहिये, और शुद्ध कृष्ण मृगचर्मका सुन्दर आसन होता है ॥१६॥ सत्वगुणप्रधान विष्णुके उपासकोंका संग होना चाहिये, शुक्लभिक्षा भिक्षा होती है, एवं तोम्बीका पात्र होता है ॥१७॥ शंख, चक्र, गदा आदिकी तप्त मुद्रा होती हैं, एवं द्वादश अंगोंमें ऊर्ध्वपुंड्र तिलक लगाना चाहिये ॥१८॥विजयानन्द आनंद और सागरोत्पन्न शंखकी कल्पना करे; गोल २ एक सौ आठ दानेकी तुलसीकी माला होती है ॥१९॥ अगस्त्यसंहितातन्त्रमें रामतत्व गुप्त है, मन वचन कर्मसे उनकी चरणसेवा करना भक्ति है ॥२०॥ श्रीवैष्णवोंके चरणामृतकी सेवा करना गुह्य है, जो व्यक्ति इस प्रकार संप्रदायकी धारणा करता है उसीको वैष्णव कहते हैं ॥ २१ ॥ द्वितीय धामक्षेत्र समाप्त ॥ २ ॥

श्रीरामानुजसंप्रदायनितरां चेतस्सता सर्वदायोध्याधर्मविधायिनी शुभतरा शालाविला-

सत्तु सः ॥ सश्रेयः शुभचित्रकूटशिखरी गोदा-
वरीसंक्रमः ॥ श्रीरंगाख्यसुधामकं शुभतरं क्षेत्रं
धनुस्तीर्थकम् ॥१॥ गोत्रं चाच्युतसंज्ञकं सुशुभदं
शुक्लश्च वर्णो भवेच्छ्रीमद्राम उपास्य एव भगवा-
निष्टा तु सीता सदा ॥ आचार्याः कमलोर्ध्वपुंड्र-
तिलकं मन्त्रं परं तारकं विश्वामित्र ऋषिर्वसि
ष्ठमुनिको देवो भवेन्मारुतिः ॥ २ ॥ सामीप्यं
शुभमुक्तिरेव परमा शाखा त्वनन्ता मता श्रीरा-
मत्रिपदिर्मता तु कमला देवा तु पूज्योच्यते ॥
ऋग्वेदो हरिनामकं त्वशनकं द्वारं तु कर्णं मतं
विष्वक्सेन उपार्षदो भवतु वै श्रीवैष्णवानां सदा
॥ ३ ॥ इति तृतीयं धामक्षेत्रम् ॥ ३ ॥

श्रीरामानुजसंप्रदाय, धर्मविधान करनेवाली अति शुभ अयोध्या विलास, सुन्दर शिखरोंवाला चित्रकूट शुभ है और गोदावरीका संगम है, श्रीरंग नामका सुन्दर धाम तथा धनुषतीर्थ क्षेत्र है ॥ १ ॥

शुभदायी अच्युत गोत्र, शुक्ल वर्ण, श्रीरामजी उपस्यादेवता और सीता इष्ट है, कमल ऊर्ध्वपुंड्र तिलक आचार्य हैं, तारक परम मंत्र है विश्वामित्र ऋषि वशिष्ठ-मुनि और पवनतनय देवता हैं ॥२॥ शुभ सामीप्यही मुक्ति है, अनन्तशाखा शाखा है, श्रीरामगायत्री त्रिपदी मंत्र और कमला (लक्ष्मी) देवी पूज्य कही गई है, ऋग्वेद वेद हरिनाम करणद्वार और विष्वक्सेन वैष्णवोंके उपार्षद होते हैं ॥ ३ तृतीयधामक्षेत्र समाप्त ॥ ३ ॥

भाषा—श्रीनिम्बादित्यगुरुप्रमाण ॥ मथुरा धर्मशाला ॥ क्षेत्र गोमती ॥ वृन्दावन सुखविलास ॥ गोवर्धनपरिक्रमा ॥ द्वारावती धाम ॥ रुक्मिणी इष्ट ॥ गोपाल उपासी ॥ वंशगोपालमन्त्रः ॥ ॐ क्लीं गोपालाय गोचराय वंशशब्दाय नमो नमः ॥ गोपालगायत्री ॥ हंसशाखा ॥ सारूप्यमुक्ति ॥ नासिकाद्वार ॥ सनकादिक आचार्य्य॥

नारदमुनि ॥ दुर्वासाऋषि ॥ गरुडमन्त्रः । ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः ॥ इतिगरुडमन्त्रः ॥ सामवेद ॥ श्रीभटमहाप्रसाद ॥ अच्युतगोत्र ॥ शुक्लवर्ण ॥ हरिनामअहार ॥ सुषेनपार्षद ॥ निम्बादित्यवैष्णवाः ॥ ४ ॥

भाषा "श्रीनिम्बादित्य--निम्बादित्यवैष्णवाः" यह सब मूलहीमें स्पष्ट लिखे गये हैं ।

संस्कृतेऽपि

निम्बादित्यानुयायिनां सर्वदा सुखदायिनी ॥ मथुरा धर्मशाला स्यात् क्षेत्रं तु गोमती मतम् ॥१॥ वृंदावनं विलासः स्याद्गोवर्धनपरिभ्रमः ॥ द्वारावती सुधाम स्यादिष्टा तु रुक्मिणी भवेत् ॥ २ ॥ श्रीगोपाल उपास्यश्च वंशगोपालमंत्रकः॥हंसशाखा सारूप्यमुक्तिर्गोपालत्रिपदिर्मता ॥३॥ सनकादिक आचार्यो द्वारं तु नासिका भवेत् ॥ मुनिस्तु नारदश्चैव दुर्वासाश्चार्षिरुच्यते ॥४॥ गरुडो देवता चैव सामवेदस्तथैव च ॥ शुक्लवर्णोऽच्युतं गोत्रमाहारो हरिनामकम् ॥ ५ ॥ सुषेणपार्षदश्चैववैष्णानां तु सर्वदा ॥ ६ ॥ इति धामक्षेत्रम् ॥ ५ ॥

संस्कृतमें भी लिखा है-निंबार्कमतके अनुयायियोंको सदा सुख देनेवाली धर्मशाला मथुरा है गौतमी क्षेत्र है ॥ ॥ १ ॥ वृंदावन विलास और परिभ्रमण स्थान गोवर्द्धन है, द्वारकापुरी सुन्दर धाम और रुक्मिणी इष्ट है ॥ २ ॥ श्रीगोपाल उपास्य देवता और वंशगोपाल मंत्र है, हंस शाखा सारूप्यमुक्ति एवं गोपालगायत्री है ॥३॥ सनकादिक आचार्य्य, नासिका द्वारा, नारदजी मुनि, और दुर्वासा ऋषि हैं ॥ ४ ॥ गरुडदेवता, सामवेद, वेद, शुक्लवर्ण, अच्युतगोत्र, एवं हरिनाम आहार है ॥ ५ ॥ अथच वैष्णवोंके लिये नित्यही सुषेण पार्षद है ॥ ६ ॥ धामक्षेत्र समाप्त ॥ ५ ॥

भाषा ।

ॐ श्री विष्णुस्यामगुरुप्रमाण ॥ विष्णुकांची धर्मशाला ॥ मार्कंडेय क्षेत्र ॥ इंद्रद्युम्न सुखविलास ॥ सायुज्य मुक्ति ॥ लक्ष्मी इष्ट ॥ जगन्नाथ उपासी ॥ तुलसीमंत्रः ॥ ॐ क्लीं वृन्दायै नमः ॥ त्रिपुरारीशाखा वामदेव आचार्य्य ॥ पुरुषोत्तम धाम ॥ नेत्रद्वार ॥ हरिनाम अहार ॥ सुनंद पार्षद ॥ यजुर्वेद ॥ अच्युतगोत्र ॥ शुक्लवर्ण ॥ वटेकृष्णपारिक्रमा ॥ जलबिंब ऋषिः ॥ नाद्या देवता ॥ इति श्रीविष्णुश्यामवैष्णवाः ॥६॥

भाषा—"ॐ श्रीविष्णु—इति श्रीविष्णुश्यामवैष्णवाः" इत्यादि मूलहीमें स्पष्ट लिखा है ॥ ६ ॥

संस्कृतेऽपि ।

विष्णुश्यामानुयायिनां सर्वदाशुभदायिनी ॥
विष्णुकांची धर्मशाला मार्कंडं क्षेत्रकं मतम् ॥ १ ॥
इंद्रद्युम्नविलासः स्यात् सायुज्यं मुक्तिरुच्यते ॥

जगन्नाथ उपस्य स्यादिष्टा तु कमला तथा ॥ २ ॥
श्रीतुलसीमंत्रः परमः त्रिपुरारिः शाखोच्यते ॥
आचार्य्यो वामदेवश्च द्वार तु नयनं मतम् ॥ ३ ॥
पुरुषोत्तमाख्यं धाम चाहारो हरिनामकम् ॥
सुनंदः पार्षदः प्रोक्तो यजुर्वेदस्तथैव च ॥ ४ ॥
शुक्लो वर्णोऽच्युतं गोत्रं वटे कृष्णपरिभ्रमः ॥
जलबिंबश्चर्षिभवेन्नादिको देवता तथा ॥ ५ ॥
एताः संज्ञा शुभतारा वैष्णवानां तु सर्वदा ॥ ६ ॥
इति धामक्षेत्रम् ॥ ७ ॥

संस्कृतमेंभी लिखा है—विष्णुश्यामके जो अनुयायी हैं उन्हें नित्य सुख देनेवाली विष्णुकांची धर्मशाला है, मार्कंड क्षेत्र है ॥ १ ॥ इन्द्रद्युम्न विलास है और सायुज्य मुक्ति है, जगन्नाथ उपास्य देवता और कमला इष्ट है,॥ ॥ २ ॥ तुलसी परम मन्त्र है, त्रिपुरारी शाखा है, वामदेव आचार्य्य और नेत्र द्वार है ॥ ३ ॥ पुरुषोत्तम धाम, हरिनाम आहार, सुनन्द पार्षद एवं यजुर्वेद वेद है ॥४॥

शुक्लवर्ण अच्युतगोत्र एवं वटके ऊपर कृष्णका भ्रमण है, जलबिंब ऋषि और नन्दक देवता है ॥ ५ ॥ वैष्णवोंके लिये ये संज्ञायें विशेष शुभ हैं ॥ ६ ॥ धामक्षेत्र समाप्त ॥ ७ ॥

भाषा

ॐ श्रीमाधवाचार्यगुरुप्रमाण ॥ अवंतिकापुरि-धर्मशाला ॥ बद्रिकाश्रम धाम ॥ नैमिषारण्य सुखविलास ॥ अंगपात क्षेत्र ॥ सावित्री इष्ट ॥ ब्रह्म उपासी विष्णुहंसमंत्र ॥ हंस देवता ॥ सालोक्य मुक्ति ॥ मुख द्वार ॥ त्रिकाल आचार्य्य ॥ अद्वैत शाखा ॥ अच्युतगोत्र ॥ शुक्लवर्ण ॥ हरिनाम अहार ॥ परमहंस ऋषि ॥ नंद पार्षद ॥ अथर्ववेद॥ इति श्री माधवाचार्यवैष्णवाः ॥ ८ ॥

भाषा—" श्रीमाधवाचार्य्य—इति माधवाचार्य्य वैष्णवाः " पर्य्यन्त सब मूलहीमें स्पष्ट लिखा है ॥ ८ ॥

संस्कृतेपि

श्रीमाधवानुयायिनां सर्वदा सुखदायिनी ॥
अवंतिका धर्मशाला क्षेत्रं चैवांगपातकम् ॥ १ ॥
श्रीबद्रिकाश्रमं धामं हंसस्तु देवता मता ॥
विलासो नैमिषारण्यमिष्टा तु सावित्री मता ॥२॥
उपास्यं परमं ब्रह्म सालोक्यं मुक्तिरेव च ॥
श्रीविष्णुहंसमन्त्रोद्धारं तु वदनं भवेत् ॥ ३ ॥
अद्वैतशाखा सुखदाहारस्तु हरिनामकम् ॥ शुक्लो
वर्णोऽच्युतं गोत्रमाचार्य्यस्त्रिकालो मतः ॥ ४ ॥
नंदाख्या पार्षदाश्चैवाथर्ववेदस्तथैव च ॥ ऋषिः
श्रीपरमहंसो वैष्णवानां तु सर्वदा ॥ ५ ॥ इति
धामक्षेत्रम् ॥ ९ ॥

संस्कृतमें भी लिखा है—जो लोग श्रीमाधवाचार्य्यके मतके अनुयायी हैं उन्हें सदैव सुख देनेवाली अवन्तिका धर्मशाला है, अंगपातक क्षेत्र है ॥ १ ॥ श्रीबदारिकाश्रम धाम, हंस देवता, नैमिषारण्य विलास और सावित्री इष्ट

है ॥ २ ॥ उपास्य देवता परम ब्रह्म और शालोक्यमुक्ति है, एवं श्रीविष्णुमंत्रोद्धार मुख है ॥ ३ ॥ सुखदायिनी अद्वैत और हरिनाम आहार है, शुक्लवर्ण अच्युतगोत्र और त्रिकालआचार्य्य है ॥ ४ ॥ नन्द पार्षद और अथर्ववेद वेद है, एवं वैष्णवोंके लिये श्रीपरमहंसऋषि हैं ॥ ५ ॥ इति धामक्षेत्र समाप्त ॥ ९ ॥

भाषा

चतुरोभ्राता ॥ द्राविडनगरी ॥ माता वरुणावती ॥ पिता अगस्त्यमुनि ॥ गुरु धर्मऋषि ॥ स्वर्गनगरी ॥ अच्युतगोत्र ॥ शुक्लवर्ण ॥ अनंतशाखा ॥ श्वसनवेद ॥ निष्कामभिक्षा ॥ रंगनाथधाम ॥ तोताद्रि सुखविलास ॥ मैलकोटा पाट ॥ हरिनाम अहार ॥ परमबद्रिकाश्रम क्षेत्र ॥ मठ वैकुंठ ॥ लक्ष्मी देवी ॥ नारायण देवता ॥ पूजा अक्षयवटकी ॥ शुक्लसं । प्रदा ॥ उखल आखाडा ॥

शून्यस्थान ॥ सुमेरुपरिक्रमा ॥ बीजमन्त्रः इति धामक्षेत्रम् ॥ १० ॥

भाषा—"चतुरोभ्राता—बीजमन्त्रः" यह सब मूलहीमें स्पष्ट है । इति धामक्षेत्र संपूर्ण ॥ १० ॥

संस्कृतेऽपि

चत्वारो भ्रातरश्चैव जगतिधर्मस्थापकाः ॥
माता वरुणवती स्यात् पितागस्त्यस्तथैव च ॥१॥
ऋषिश्च गुरुधर्मः स्यात् स्वर्नगरी तथैव च ॥
अच्युताख्यं सुगोत्रं स्यात् शुक्लवर्णस्तथैव च ॥२॥
अनन्ताख्या शाखा स्यात् श्वसनाख्यश्च वेदो वै ॥ निष्कामाख्या च भिक्षा स्याद्धामकं रंगनाथकम् ॥ ३ ॥ तोताद्रिसुखविलासो मैलकोटाख्यपाटकम् ॥ आहारो हरिनामश्च क्षेत्रं च बद्रिकाश्रमम् ॥४॥ देवो नारायणो भवेद्देवी लक्ष्मीस्तथैव च ॥ वैकुंठं मन्दिरं चैव अक्षयवटस्य

पूजनम् ॥ ५ ॥ शुक्लाख्यसंप्रदायश्चाऽऽखाडाख्यं स्यादुखलाख्यकम् ॥ शून्यं स्थानं बीजमन्त्रः सुमेरोराश्रमो भवेत् ॥ ६ ॥ इति चतुर्थसंप्रदायानुगानां धामक्षेत्रम् संपूर्णम् ॥ ११ ॥

संस्कृतमें भी लिखा है—चारोंही भ्राताओंने जगत्में धर्मकी स्थापना की है, माता वरुणवती और पिता अगस्त्य हैं ॥१॥ गुरु धर्म ऋषि, स्वर्ग नगरी, अच्युत गोत्र और शुक्ल वर्ण है ॥ २ ॥ अनन्त शाखा, श्वसन वेद निष्काम भिक्षा, और रंगनाथ धाम है ॥३॥ सुखविलास तोताद्रि है, मेलकोटा पाट, हरिनाम आहार तथा बदरिकाश्रम क्षेत्र है ॥ ४ ॥ नारायण देवता, लक्ष्मी देवी, वैकुण्ठ मन्दिर और अक्षयवटका पूजन होता है ॥५॥ शुक्ल संप्रदाय उखल अखाडा, शून्य मंत्र, बीज मंत्र और सुमेरु भ्रमणस्थान है ॥ ६ ॥ चारों संप्रदायके अनुयायियोंके धाम और क्षेत्र समाप्त ॥ ११ ॥

भद्ररूपं तप्तचक्रं तुलसी गोपीमृत्तिका ॥ रामकृष्णमन्त्रश्च शिखसूत्रकमण्डलुः धौतवस्त्रं गुरोर्वाक्यं दशलक्षणवैष्णवाः ॥

भद्ररूप, तप्तचक्रांकित, तुलसी, गोपीचन्दन, रामकृष्णमंत्र, शिखा, सूत्र (जनेऊ—यज्ञोपवीत), कमण्डलुधौत वस्त्र और गुरुवाक्य इन दश लक्षणोंको धारन करने, वालेको वैष्णव कहते हैं ।

तिलक विधिः

ॐ ललाटे केशवं ध्यायेन्नारायणमथोदरे ॥ वक्षः—स्थले माधवं च गोविन्दं कंठकूबरे ॥ १ ॥ विष्णुं च दक्षिणे कुक्षौ तद्बाहौ मधुसूदनम् ॥ त्रिविक्रमंकंधरे तु वामनं वामपार्श्वके ॥ २ ॥ श्रीधरं बहुके वामे हृषीकेशं तु कंधरे ॥ पृष्ठे तु पद्मनाभं च त्रिकं दामोदरं न्यसेत् ॥ ३ ॥

अथ तिलकविधि—ललाटमें केशव, उदरमें नारायण

वक्षःस्थलमें माधव और कण्ठके कुबरमें गोविन्दका ध्यान करना चाहिये ॥ १ ॥ दाहिनी कुक्षि (कोख) में विष्णु, दाहिनी भुजामें मधुसूदन, कन्धेमें त्रिविक्रम और वाम पार्श्वमें वामनका ध्यान करै ॥ २ ॥ वाम बाहुमें श्रीधर और वाम कन्धेमें हृषीकेश, पृष्ठमें पद्मनाभ एवं त्रिकमें दामोदरका न्यास करै ॥ ३ ॥ इस प्रकार तिलक लगावे।

भूतशुद्धिः

ॐ प्रातरुत्थाय शौचस्नानं कृत्वा ॥ मूलमन्त्रं त्रिवारं पठित्वा ॥ आचम्य ॥ ॐ कारमध्ये स्वगुरुं च श्रीरामचन्द्रं ध्यात्वा भूतशुद्धिं कृत्वा ॥ सोऽहं यं वायुबीजेन षोडशवारं जपन् ॥ पापपुरुषं विशोषयेत् ॥ रं अग्निबीजेन चतुःषष्टिवारं जपन् ॥ पापपुरुषं प्रज्वालयेत् ॥ वं चन्द्रबीजेन द्वात्रिंशद्वारं जपन् ॥ नवमृतमयं शरीरमुत्पादयेत् ॥ द्विप्रणवमध्ये रां बीजं हस्तमध्ये लिखितं हस्तसंपुटं कृत्वा ॥ मूलमन्त्रं सप्तवारं जपित्वा ॥ द्वादशतिलकं कुर्यात् ॥

अब भूतशुद्धिका वर्णन करते हैं—प्रभात समय उठकर शौच और स्नान करके तीन वार मूलमन्त्रको पढकर आचमन करै। ॐ कारके मध्यमें अपने गुरु और श्रीरामचन्द्रका ध्यान करना चाहिये। भूतशुद्धि करके "सोऽहम्" का 'यं' वायुबीजसे सोलह बार जप करता २ पाप पुरुषका शोषण करै; 'रं' अग्निबीजसे चौसठ बार जप करता करता पाप पुरुषको प्रज्वलित करै, 'वं' चन्द्रबीजसे बत्तीस बार जप करता २ मृत हुएका नवीन शरीर उत्पादन करै। दो ॐ कारोंके मध्यमें "रां" बीजको हस्तके मध्यमें लिखकर हाथका सम्पुट करै और सात वार मूलमन्त्रका जप करके द्वादश तिलक लगावै।

अथ तिलकम्

ॐ रां रामाय नमः ललाटे । रां रां नाभौ रां रां हृदि । रां रां कंठे । रां रां दक्षिणकुक्षौ । रां रां दक्षिणबाहौ । रां रां दक्षिणस्कंधे । रां रां वामकुक्षौ । रां रां वामबाहौ । रां रां वामस्कंधे । रां रां कटिपृष्ठे । रां रां कंठपृष्ठे । रां रां हस्तौ । प्रक्षाल्य मूर्द्धनि सेचनं कुर्यात् । इति तिलकम् ॥

अर्थ तिलक–" ॐ रां रामाय नमः–कंठपृष्ठे " पर्य्यन्त मूल लिखित स्थानोंमें तिलक लगावै। फिर " रां रां " से हाथ धोकर मूर्द्धामें सेचन करै। तिलक समाप्त ।

ॐ रां रां ॐ रां रां ॐ रां रां ॥ इत्याचमनमंत्रः ॥ ॐ रां रां दक्षिणकरं प्रक्षाल्य ॥ ॐ रां रां वामकरं प्रक्षाल्य ॥ ॐ रां रां मार्जनम् ॥ ॐ रां रां उन्मार्जयेत् ॥

"ॐ रां रां ३" यह आचमनका मंत्र है । "ॐ रां रां" से दक्षिण कर प्रक्षालन करे । " रां रां" से वामकर प्रक्षालन करे । तदनन्तर "ॐ रां रां" से मार्जन और "ॐ रां रां" से उन्मार्जन करे ।

ॐ रां रां पादयोः ॥ ॐ रां रां नाभौ ॥ ॐ रां रां शिरसि ॥ ॐ रां रां भुजे । ॐ रां रां मुखे ॥ ॐ रां रां दक्षिणनासापुटे ॥ ॐ रां रां वामनासापुटे ॥ ॐ रां रां दक्षिणनेत्रे ॥ ॐ रां रां वामनेत्रे ॐ रां रां दक्षिणकर्णे ॥ ॐ रां रां वामकर्णे ॥ ॐ रां रां दक्षिणस्कंधे ॥ ॐ रां रां वामस्कंधे ॥ ॐ रां रां इत्याचमनम् ॥

तत्पश्चात् "ॐ रां रां पादयोः–ॐ रां रां वामस्कंधे" आदिसे मूललिखित अंगाभिमंत्रण कर "ॐ रां रां" से आचमन करे ।

प्राणप्रतिष्ठा

ॐ रां रां बीजं षोडशवारं जपन् पूरकम् ॥१६॥
ॐ रां रां चतुषष्टिवारं जपन् कुंभकम् ॥६४॥
ॐ रां रां बीजं द्वात्रिंशद्वारं जपन् रेचकम्॥३२॥
इति प्राणायामः ॥

अब प्राणप्रतिष्ठाका वर्णन करते हैं—"ॐ रां रां" बीजमंत्रको सोलह बार जपकर पूरण १६, 'ॐरां रां' बीजमंत्रको चौंसठ बार जपकर कुम्भक ६४ और 'ॐ रां रां' बीजमंत्रको बत्तीस बार जप कर रेचक प्राणायाम करना कर्तव्य है । प्राणायाम समाप्त ।

ॐ सोहं हंस मम प्राण इह प्राणः ॥ मम जीव इह स्थितः ॥ मम सर्वेंद्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुश्रोत्र-घ्राणप्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

मैं वह हूं, वह मैं हूं मेरे प्राण और जीव यहां स्थित हो, मेरी सब इंद्रियें वाक् मन नेत्र श्रोत्र नासिका और प्राण यहां आकर सुखपूर्वक चिरकालपर्य्यन्त स्थित हों । प्राणप्रतिष्ठा समाप्त ।

मूलमंत्रेण सर्वांगन्यासः

ॐ अस्य श्रीषडक्षररामसंत्रस्य श्रीजानकीऋषिर्गायत्रीछंदः ॥ श्रीरामो देवता रां बीजं नमः शक्तिः रामाय कीलकं श्रीसीतारामप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः इति संकल्पः ॥

मूलमन्त्रके द्वारा सर्वांग न्यास करे । इस षडक्षर श्रीराममन्त्रकी जानकी ऋषि, गायत्री मन्त्र, श्रीराम देवता, रां बीज, नमःशक्ति, रामाय कीलक और श्रीसीतारामजीकी प्रीतिके निमित्त जप करनेमें विनियोग है । संकल्प समाप्त ।

इस अवसरपर आचमन और प्राणायाम भी करना कर्तव्य है ।

ऋष्यादिन्यासः

अत्राचमनं प्राणायामं च कारयेत् ॥ ॐ जानकी ऋषये नमः शिरसि ॥ गायत्री छंदसे नमः मुखे ॥ श्रीरामो देवतायै नमः हृदि रां बीजाय नमः गुह्ये ॥ नमः शक्तये नमः पादयोः ॥ रामाय कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥

"ॐ जानकी—सर्वांगे" से मूलोक्त अंगोंका स्पर्श करना चाहिये । ऋष्यादिन्यास समाप्त ।

करन्यासः

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः ॥ ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥

"ॐ रां रीं--करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः" से मूललिखित अंगोंका स्पर्श करके करन्यास करे । करन्यास समाप्त ।

अंगन्यासः

ॐ रां हृदयाय नमः॥ॐ रीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ रैं कवचाय हुं ॥ ॐ रौं नेत्राभ्यां वौषट् ॥ ॐ रः अस्त्राय फट् ॥ इत्यंगन्यासः ॥

" ॐ रां हृदयाय—अस्त्रायफट्" से मूलोक्त अंगस्पर्श पूर्वक अंगन्यास करे । अंगन्यास समाप्त ।

दिग्बंधनम्

ततः तालत्रयं कृत्वा मूलमंत्रेण दशदिग्बंधनं कृत्वा ॥ ॐ रां रक्षतु प्राच्याम् ॥ ॐ रां रक्षतु दक्षिणे ॥ ॐ रां रक्षतु प्रतीच्याम् ॥ ॐ रां रक्षतु उदीच्याम् ॥ ॐ रां रक्षतु आग्नेय्यां ॥ ॐ रां रक्षतु नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ रां रक्षतु वाय

व्याम् ॥ ॐ रां रक्षतु ईशान्याम् ॥ ॐ रक्षतु ऊर्ध्वं ॥ ॐ रां रक्षतु अधो माम् ॥ इति दिग्बंधनम् ॥

तत्पश्चात् तीन बार ताली बजाके मूलमंत्रके द्वारा दशों दिशाओंका बन्धन करे । "ॐ रां रक्षतु–अधो-माम्" से मूलमें लिखी हुई दिशाओंका नामोच्चारण कर दिग्बन्धन करना कर्तव्य है । दिग्बन्धन समाप्त ।

पदन्यासः

ॐ रां नमो मूर्ध्नि ॥ ॐ रामाय नमः नाभौ ॥ ॐ नमो नमः पादयोः ॥ इति पदन्यासः ॥

"ॐ रां नमो–पादयोः" से मूलोक्त विधिके अनुसार पदन्यास करे । पदन्यास समाप्त ।

अंगन्यासः

ॐ रां नमो मूर्ध्नि ॥ ॐ रां नमो भ्रुवोर्मध्ये । ॐ मां नमो हृदि ॥ ॐ यं नमो नाभौ ॥ ॐ

नं नमो गुह्ये ॥ ॐ मं नमः पादयोः इति ऋष्यादिन्यासः ॥

"ॐ रां नमो मूर्ध्नि–पादयोः" से मूलमें लिखे अंगोंका स्पर्श करके ऋष्यादिन्यास करे । ऋष्यादिन्यास समाप्त ।

ध्यानम्

रामरत्नमहं वंदे चित्रकूटपतिं हरिम् ॥
कौशल्याशुक्तिसंभूतं जानकीकंठभूषणम् ॥

अब ध्यानका वर्णन करते हैं–जो समस्त पापोंका अपहरण करनेवाले और चित्रकूटके स्वामी हैं, जिन रामरत्नका कौशल्यारूप शुक्तिसे प्रादुर्भाव हुआ है, एवं जो जानकीके कण्ठके आभूषण हैं ऐसे रघुनन्दनको हम अभिवादन करते हैं ।

शंखप्रार्थनामंत्रः

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥
नमंति सर्वभूतानि पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

हे पांचजन्यशंख! पूर्वकालमें तुम्हारा जन्म समुद्रसे हुआ और श्रीविष्णुभगवान्‌ने तुम्हें अपने हाथमें धारण किया था, अत एव समस्त प्राणीगण तुम्हें नमस्कार करते हैं, सुतराम् तुम्हें अभिवादन है ॥ १ ॥ यह शंखकी प्रार्थनाका मन्त्र है।

गरुडपार्षद

ॐ सर्ववाद्यमयी घंटा देवदेवस्य वल्लभा ॥
त्वन्निनादेन सर्व्वेषां शुभं भवति शोभने ॥ २ ॥

घंटा समस्त वाद्योंका स्वरूप है, देवाधिदेव भगवान्‌को वह अतीव प्रिय है,हे शोभने? तुम्हारी ध्वनिसे सबका मंगल होता है ॥२॥ यह गरुडपार्षद मन्त्र है।

उत्थापन

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः ॥ ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ श्रीराम उत्तिष्ठ जानकीपते॥ उत्तिष्ठकमलाकांत त्रैलोक्यं मंगलं कुरु ॥ ३ ॥

"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रैं ग्रौं ग्रः"हे जानकीनाथ राम!!! आप उठिये, हे लक्ष्मीपति! आप उठकर त्रिलोकीको मंगलस्वरूप बनाइये ॥ ३ ॥

द्वितीयोत्थापनमंत्रः

ॐ उत्तिष्ठोतिष्ठ भद्रं ते उत्तिष्ठ जगदीश्वर ॥
त्वयि उत्थापमाने तु उत्थितं भुवनत्रयम् ॥४॥

हे जगदीश्वर! उठिये आपका कल्याण हो, आपके उठनेपर तीनों भुवन उठते हैं॥ ४ ॥ यह जगानेका मन्त्र है।

आवाहनमन्त्र

ॐ आगच्छ भगवन्विष्णो स्वस्थानात्परमेश्वर ॥
अहं पूजां करिष्यामि सदा त्वं सन्मुखो भव॥५॥

हे परमेश्वर विष्णु भगवान्!!! आप अपने स्थानसे यहां पधारिये, हम आपकी पूजा करेंगे और आप सदा हमारे सन्मुख रहिये ॥५॥ यह आवाहनका मन्त्र है।

आसनमंत्रः

ॐ सिंहासने सुवर्णस्य नानारत्नोपशोभिते ॥
अनन्तफणपत्रस्थ उपविश्यासने प्रभो ॥ ६ ॥

हे प्रभो ! अनेक रत्नोंके संयोगसे शोभायमा सुवर्ण निर्मित और जो शेषजीके फणरूपपत्रके ऊपर स्थित है ऐसे सिंहासनके ऊपर आप विराजिये ॥६॥ यह आसनका मन्त्र है ।

पाद्यमंत्रः

ॐ स्नानार्थं स्वच्छतोयानि गंधपुष्पयुतानि च ॥
पाद्यं गृहाण देवेश भक्तानुग्रहकारक ॥ ७ ॥

भक्तोंके ऊपर अनुग्रह करनेवाले हे देवराज ! ! ! जिनमें सुगन्धि द्रव्य और पुष्प सम्मिलित हैं ऐसे स्वच्छ (निर्मल) जलोंको आप स्नानके लिये पाद्य ग्रहण करिये ॥ ७ ॥ यह पाद्यमन्त्र है ।

अर्घमंत्रः

ॐ शंखतोयं समानीतं गंधपुष्पादिवासितम् ॥
अर्घ्यं गृहाण देवेश प्रीत्यर्थं मे सदा प्रभो॥८॥

गन्ध और पुष्पादिकसे महकते हुए शंखजलको हम आपकी प्रीतिके निमित्त अर्घ्यके लिये लाये हैं, हे प्रभो आप इसे ग्रहण करिये ॥ ८ ॥ अर्घ्यमन्त्र समाप्त ।

मधुपर्कादिस्नानमंत्रः

ॐ दधिदुग्धमधुसर्पिश्शर्करा च तथा प्रभो ॥
समर्पयामि देवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ९ ॥

दधि (दही), दूध, मधु (शहत), घृत, शर्करा, इन सब वस्तुओंको हम आपकी प्रीतिके निमित्त अर्पण करते हैं, आप ग्रहण करिये ॥ ९ ॥ मधुपर्क आदिसे स्नान करानेका मन्त्र है ।

स्नानमंत्रः

ॐ गंगा सरस्वती तापी पयोष्णिनर्मदार्कजा ॥
तज्जलै स्नापितो देव तेन शांतिं कुरुष्व मे॥१०॥

गंगा सरस्वती तापी पयोष्णी नर्मदा और यमुना इन नदियोंके जलसे हम स्नान कराते हैं, इससे आप हमारे लिये शान्तिका विधान करिये ॥१०॥ स्नान-मन्त्र समाप्त ।

आचमनमंत्रः

ॐ गंगातोयं समानीतं सुवर्णकलशोद्धृतम् ॥
आचम्यं देवदेवेश प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ११ ॥

हे देवेश्वर! गंगाजलको हम सुवर्णकलशमेंसे आपकी प्रीतिके तईं लाये हैं सो इस आचमनको आप ग्रहण करिये ॥ ११ ॥ आचमनमन्त्र समाप्त ।

वस्त्रमंत्रः

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं परलज्जानिवारणम् ॥
सुवेषं धारयेद्यस्माद्वासोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१२॥

जो शीत वायु और ऊष्मासे रक्षा करता है, जो दूसरोंसे लज्जाका निवारण करता है, और जिससे सुन्दर वेषका सम्पादन होता है ऐसे वस्त्रको आप ग्रहण करिये ॥ १२ ॥ वस्त्रमन्त्र समाप्त ।

यज्ञोपवीतमंत्रः

ॐ ब्रह्मणा निर्मितं सूत्रं विष्णुग्रंथिसमन्वितम् ॥
इदं यज्ञोपवीतं च गृहतां तु जनार्दनः ॥ १३ ॥

जिस ब्रह्मनिर्मित सूत्रमें विष्णु ग्रन्थि लगी हुई है, ऐसे यज्ञोपवीतको हे जनार्दन! ग्रहण करिये ॥१३॥ यज्ञोपवीतमन्त्र समाप्त ।

आचमनमंत्रः

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॥ १४ ॥

"ॐ विष्णुः ३" से आचमण करे ॥ १४ ॥ आचमनका मन्त्र समाप्त ।

भूषणमंत्रः

ॐ किरीटं कुण्डलं हारं कंकणांगदनूपुरम् ॥
नानारत्नमयं अंगे भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ १५ ॥

मुकुट, कुंडल, हार, कंकन, बाजू बन्द और नूपुर अनेक रत्नोंसे जडे हुए इन सब आभूषणोंको अंगमें धारण करिये ॥ १५ ॥ आभूषणमन्त्र समाप्त ।

चन्दनमंत्रः

मलयाचलसंभूतं शीतमानंदवर्द्धनम् ॥
काश्मीरवनसाराढ्यं चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १६ ॥

जिसकी उत्पत्ति मलय पर्वतके ऊपर हुई है, जो शीतल होनेके कारण आनन्द प्रदान करनेवाला है, और जिसमें कश्मीरी केशर मिला हुआ है, ऐसे चन्दनको आप ग्रहण करिये॥१६॥ चन्दनका मंत्र समाप्त।

तुलसीसमर्पणमंत्रः

यथा सीता च दयिता तथा च मंजरी हरेः ॥
गृहाण तुलसीं तस्माच्चंदनेन तु मिश्रितम् ॥१७॥

सीता और तुलसीकी मंजरी दोनोंही हरिकी पत्नी हैं, इसीसे आप चन्दनसमेत तुलसीको ग्रहण करिये ॥१७॥ तुलसी समर्पण करनेका मन्त्र समाप्त।

उत्तरीयवस्त्रमंत्रः ।

ॐ ब्रह्मार्पितं समायाति शक्राद्याः सर्वे देवताः ॥
वस्त्रं गृहाण देवेश प्रीत्यर्थं मे सदा प्रभो ॥ १८ ॥

हे प्रभो! ब्रह्मा और इन्द्रादि सब देवताओंसे अर्पण किये हुए वस्त्रको हमारी प्रीतिसंपदनार्थ आप ग्रहण करें ॥१८॥ यह उत्तरीय वस्त्र समर्पण करनेका मंत्र है।

आचमनमन्त्रः

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॥ इत्याचमनम् ॥

"ॐ विष्णुः३" इस प्रकार तीनबार कहकर आच मन करना कर्त्तव्य है ।

पुष्पमंत्रः

ॐ नानाविधानि पुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानि च॥
मयार्पितानि सर्वाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१९॥

ऋतु और समयके अनुसार उत्पन्न हुए नाना प्रकारके पुष्पोंको हम आपकी पूजा करनेके अर्थ अर्पण करते हैं, इन्हें आप ग्रहण करें ॥ १९ ॥ पुष्पमंत्र समाप्त ।

धूपमंत्रः

ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नं सुगंधाढ्यं मनोहरम् ॥
आघ्रेयं सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥२०॥

जिसका प्रादुर्भाव वनस्पतियोंके रससे हुआ है, जो सुगन्धियोंसे भरपूर होनेके कारण अतीव मनोहर है, अत एव सब देवता जिसे सूंघते हैं ऐसी इस धूपको आपभी ग्रहण करें ॥ २० ॥ धूपका मंत्र समाप्त ॥

दीपमंत्रः

ॐ घृतवर्तिसमायुक्तं तथा कर्पूरसंयुतम् ॥
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥२१॥

जिसमें घीकी बत्ती पडी है, तथा कपूरभी जिसमें मिला हुआ है (अथवा जिसमें घीकी बत्ती किंवा कपूरकी बत्ती है) जिसके प्रकाशसे तीनों लोकके अन्धकारका अपहरण होता है ऐसे दीपकको आप ग्रहणकरें ॥ ॥ २१ ॥ दीपमंत्र समाप्त ।

नैवेद्यमंत्रः

ॐ अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैःषड्भिःसमन्वितम् ॥
भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥२२॥

मधुर अम्ल लवण कटु कषाय और तिक्त इन छः प्रकारके रसोंसे पूर्ण भक्ष्य भोज्य अवलेह्य और चोष्य चारों प्रकारके अन्न अथच नैवेद्यको आप ग्रहण करिये ॥ २२ ॥ नैवेद्यमंत्र समाप्त ।

आचमनमंत्रः

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॥ २३ ॥

"ॐ विष्णुः ३" से आचमन करना कर्त्तव्य है ॥ २३ ॥

ताम्बूलमंत्रः

ॐ नागवल्लीदलं दिव्यं पूगीखदिरसंयुतम् ॥
वक्त्रंसुरभिकृत् स्वादु ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥२४॥

जिसमें पूगीफल (सुपारी) और खैर (कत्था) रक्खा है, जिसके खानेसे मुखमें सुगन्धि आने लगती है, अथच जो स्वादिष्ट है ऐसे दिव्य ताम्बूल (पान) को आप ग्रहण करें ॥ २४ ॥ ताम्बूलमंत्र समाप्त ।

आर्तिक्यमंत्रः

ॐ सुदीप्तं घृतकर्पूरं पूरितं सप्तवर्तिकम् ॥
आर्तिक्यं देवदेवेश संगृह्णीष्व मयार्पितम् ॥२५॥

घृत और कर्पूर डालकर जिसे सात बत्तियोंसे प्रदीप्त किया गया है, ऐसी आर्त्ती हम आपके अर्पण करते हैं, हे देवाधिदेव ! आप इसे स्वीकार करिये ॥ २५ ॥ आर्त्तीका मन्त्र समाप्त ।

पुनरार्तिक्यमंत्रः

ॐ चन्द्रसूर्यसमाज्योति राका तारा समन्वितम् ॥
शब्दभेर्यं त्रिदेवेश संगृहाणार्तिकं प्रभो ॥ २६ ॥

चन्द्रमा और सूर्य्यके समान जिसकी ज्योति है, जो राका और तारासे युक्त है, ऐसी आर्त्ती और भेरी-शब्दको हे प्रभो ! ग्रहण करो ॥२६॥ यह पुनर्वार आर्त्तिका मंत्र है ।

पुष्पांजलिमंत्रः

यन्मया भक्तियोगेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥
आवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकंपया ॥ २७ ॥

भक्तियोगपूर्वक पत्र पुष्प फल जल अथवा नैवेद्य

जो कुछभी आपके अर्पण हम करते हैं कृपा करके उसे स्वीकार करिये ॥ २७ ॥

द्वितीयपुष्पांजलिमंत्रः

ॐ आवृतां मृदुपुष्पाणां वनस्पतिरसैर्युताम् ॥
पुष्पांजलिं च दास्यामि संगृहाण कृपानिधे॥२८॥

जो कोमल २ पुष्पोंसे युक्त है और जिसमें वनस्पतियोंका रस पूर्ण हो रहा है, ऐसी पुष्पांजलि आपके अर्पण करता हूं हे कृपानिधान ! उसे स्वीकार करिये ॥ २८ ॥ पुष्पांजलिमन्त्र समाप्त ।

अपराधक्षमापनमंत्रः

ॐ उपचारसमस्तैस्तु यत्पूजा च मया कृता ॥
तत्सर्वं पूर्णतां यातु अपराधं क्षमस्व मे ॥ २९ ॥

अखिल उपचारोंके द्वारा हमने जो आपकी पूजा की है, हमारा अपराध क्षमा कर उसे पूर्ण करिये ॥२९॥ यह अपराध क्षमा करानेका मन्त्र है ।

प्रदक्षिणामंत्रः

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च॥
तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ २९ ॥

हमने जन्म जन्मान्तरमें जो पाप किये हैं, परिक्रमाके पग २ पै उन सबका विनाश हो ॥ २९ ॥ यह प्रदक्षिणाका मन्त्र है ।

नमस्कारमंत्रः

ॐ त्राहि मां पापिनं घोरं धर्माचारविवर्जितम् ॥
नमस्कारेण देवेश संसारार्णवपातिनम् ॥ ३० ॥

हे देवेश ! मैं अति घोरपापी हूं, अतएव मैंने धर्मके आचारणोंका परित्याग कर रक्खा है इसीसे संसारसागरमें पुञ्ज निपतित होते हुएकी आप रक्षा करिये मैं आपको नमस्कार करता हूं ॥ ३० ॥ नमस्कारमन्त्र समाप्त ।

ध्यानम्

ॐ नीलांभोधरकांतिकायमनिशं वीरासना-

ध्यासिनम् ॥ मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्तांबुजं जानुनि ॥ सीता पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवम् । पश्यंतं मुकुटांगदादिविविधैः कल्पोज्वलांगं भजे ॥ ३१ ॥

जिनके शरीरकी कान्ति नील मेघके समान सुंदर है, जो नित्यही वीरासनसे विराजमान रहते हैं, जोएक हाथसे ज्ञानमुद्रा और दूसरे हाथको जानुके ऊपर धारण करते हैं, जो चपलासी प्रभावती सीताको उस सीताको जो हाथमें कमल लिये वामभागमें विराजमान हैं अवलोकन करते हैं और मुकुट तथा बाजूबन्द आदि आभूषणोंसे जिनका अंग उज्ज्वल है ऐसे राघवका हम भजन करते हैं ॥ ३१ ॥

शयनमंत्रः

क्षीरसागरमध्ये च शेषशय्या महाशुभा ॥
तस्यां स्वपिहि देवेश कुरु निद्रां जगत्पते॥ ३२॥

क्षीरसागरके मध्यभागमें शेषनागकी अत्यन्त

उत्तम शय्या वर्त्तमान है, हे देवाधिदेव जगदीश! उसके ऊपर आप शयन करिये ॥ ३२॥ शयन मन्त्र समाप्त ।

चरणसेवनमंत्रः

ॐ तच्छय्यासुप्तो विष्णुर्लक्ष्मीचरणसेवनम् ॥
प्रणमंति सुराः सर्वे ब्रह्माभृगुश्च नारदः ॥ ३३ ॥

उस शय्याके ऊपर विष्णु शयन करते, लक्ष्मीजी उनके चरण पलोटतीं, ब्रह्मा, भृगु और नारद एवं अन्यान्य सब देवता उन्हें प्रणाम करते हैं॥ ३३॥ यह चरणसेवाका मन्त्र है ।

विसर्जनमंत्रः

ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं परात्पर ॥
पूजितोऽसि मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥३४॥

हे परमेश्वर ! मन्त्रहीन, क्रियाहीन अथवा भक्तिहीन होकर मैंने जो आपकी पूजा करी हो, वह सब परिपूर्ण हो जानी चाहिये ॥ ३४ ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजां भक्तिं न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर॥३५॥
इति विसर्जनमंत्रः ॥ इति पंचरात्रोक्तपूजा ॥

न तो हम आवाहन जानते हैं और न विसर्जनही जानते हैं, एवं भक्ति और पूजा करनेकी विधिकाभी हमें ज्ञान नहीं है अतएव हे परमेश्वर ! आपही हमें गति देनेवाले हैं ॥३५॥ यह विसर्जनका मंत्र है । पंचरात्रोक्त पूजा समाप्त ।

अथ मानसीपूजा

ॐ विमलायै नमः। उत्कर्षणायै नमः। ज्ञानायै नमः । क्रियायै नमः । योगायै नमः । ॐ प्रह्वयै नमः। ॐ सत्यायै नमः । ॐ ईशानायै नमः । ॐ अनुग्रहायै नमः ॐ भगवते नमः । ॐ सर्वात्मने नमः । ॐ योगयोग्यपद्मपीठात्मने नमः । ॐ रां रामाय नमः स्वाहा । ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः ।

श्रीसीतायै स्वाहा । अग्नये नमः । शं शार्ङ्गाय नमः । शरेभ्यो नमः । हनुमते नमः । सुग्रीवाय नमः । भरताय नमः विभीषणाय नमः । लक्ष्मणाय नमः । शत्रुघ्नाय नमः। अंगदाय नमः । जाम्बुवते नमः । सुराष्ट्राय नमः । अकोपाय नमः । धर्मपालाय नमः । सुमंताय नमः । इंद्राय नमः । यमाय नमः । नैर्ऋतये नमः। वसुधारणाय नमः । वायवे नमः । सूर्याय नमः । सोमाय नमः । अनंताय नमः । ब्रह्मणे नमः । शक्त्यै नमः । त्रिशूलाय नमः । षट्वदनाय नमः । वज्राय नमः । शंखाय नमः । चक्राय नमः । गदाय नमः । पद्माय नमः । मूलमंत्रेण पूजां कृत्वा । पश्चात्षट्लक्षपुरश्चरणं जपेत् । दशांशेन होमम् । होमदशांशेन तर्पणम् । तर्पणदशांशेन मार्जनम् । मार्जनदशांशेन ब्राह्मणवैष्णवभोजनम् ।

अब मानसिक पूजाका वर्णन करते हैं। "ॐविमलायै नमः—पद्माय नमः" से मूलमंत्रके द्वारा यथोक्त पूजा करके पीछेसे छै लाख पुरश्चरणका जप करना कर्तव्य है। जपका दशांश होम, होमका दशांश तर्पण, तर्पणका दशांश मार्जन और मार्जनका दशांश ब्राह्मणवैष्णवोंको भोजन कराना चाहिये।

अगस्त्य उवाच

मंत्ररूपं प्रवक्ष्यामि शृणु नारद तत्परः ॥
रकारादिमकारांतं मंत्रं षड्वर्णसंयुतम् ॥ १ ॥
षडक्षरात्मकं मंत्रं तारकं ब्रह्मवाचकम् ॥ राजेंद्रं
राघवं रामं राजानं रघुनंदनम् ॥ २ ॥ राजीवलोचनं वंदे रावणारिं रघूत्तमम् ॥ रामचंद्रं रघुपतिं प्रपद्ये रावणांतकम् ॥ ३ ॥ माहिषं गूगलं
श्रेष्ठं सर्वेषां च दिवौकसाम् ॥ ब्रह्मविष्णुशिवानां
च भवानीनां विशेषतः ॥ ४ ॥

अगस्त्यजी बोले—नारदजी ! तत्पर होकर श्रवण करो, हम मंत्रके रूपका वर्णन करते हैं, रकारसे मकार पर्य्यन्त छः वर्णका मन्त्र है ॥ १ ॥ षड्वर्णात्मक मंत्र तारक और ब्रह्मवाचक है, समस्त राजाओंके स्वामी, रघुवंशमें प्रादुर्भूत हुए अतएव रघुवंशियोंको विशेष आनन्द देनेवाले अथच इसी कारण सब रघुवंशियोंमें श्रेष्ठ, जिनके नेत्र कमलके समान सुन्दर हैं, जिन्होंने रावणका वध किया है ऐसे राजा रामचन्द्रजीको हम प्रणाम करते हैं, एवं हम रघुपति रामचन्द्रजीकी शरणमें उपस्थित होते हैं॥२॥॥३॥ महिष गुग्गुल सब देवताओंको अति प्रिय होता है, ब्रह्मा, विष्णु शिव और भवानीको तो औरभी अधिक प्रिय है ॥ ४ ॥

पुष्करादीनि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा ॥
वासुदेवादयो देवा वसंति तुलसीदले ॥ ५ ॥
शालग्रामशिला यत्र यत्र द्वारावती शिला ॥

उभयोः सगंमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशयः ॥ ६ ॥

पुष्कर आदि तीर्थ, गंगा आदि सब नदियें और वासुदेव आदि सकल देवगण तुलसीदलमें निवास करते हैं ॥५॥ जहां शालिग्राम अथवा द्वारकाकी शिला उपस्थित रहती है, अथच जहां दोनोंका संगम है, तहां अवश्यही मुक्तिका लाभ होता है ॥ ६ ॥

जलगायत्री

ॐ जलबिंबाय विद्महे ॥ नीलपुरुषाय धीमहि॥ तन्नो अंबु प्रचोदयात् ॥

नील बिंबको हम जानते हैं, नील पुरुषका ध्यान करते हैं, वह जल हमें शुभकर्म करनेके लिये प्रेरण करे।

करन्यासः

ॐ जलबिंबाय अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ विद्महे

तर्जनीभ्यां नमः ॥ नीलपुरुषाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ तन्नो अंबु कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ प्रचोदयात् करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥

"ॐ जलबिंबाय—करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः" से मूलोक्त अंगोंका स्पर्श करके करन्यास करे। करन्यास समाप्त।

अंगन्यासः

ॐ जलबिंबाय हृदयाय नमः ॥ विद्महे शिरसे स्वाहा ॥ नीलपुरुषाय शिखायै वषट् ॥ धीमहि कवचाय हुं ॥ तन्नो अंबु नेत्राभ्यां वौषट्॥ प्रचोद-दयात् अस्त्रायफट् ॥ इति अंगन्यासः ॥

"ॐ जलबिंबाय—अस्त्रायफट्" से मूलमें जिन २ अंगोंका उल्लेख हुआ है उनका स्पर्श करके अंगन्यास करना कर्त्तव्य है। अंगन्यास समाप्त।

जं जं वं वं लं लं जलबिंबाय नमः ॥ इति जलगायत्रीमंत्रः ॥

इति रामपटलसंपूर्णम्

जं जं वं वं लं लं जलबिम्बाय नमः" यह जल-गायत्रीका मन्त्र है ।

इति श्रीमुरादाबाददेशिक व्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृत भाषानुवादसहित रामपटल सम्पूर्ण ।

अथ ऋग्वेद पञ्च संस्कारः

अथ मुद्राविधिः॥श्रीरामपूजामध्ये मुद्रां धारयेत् ॥ ॐ श्रीरामं नत्वा मुद्राः पञ्चतत्वतोयआत्मनो निर्धारयेत् ॥ स श्रीरामस्यानुचरो भवति ॥ इति ऋ० प्रथमसंस्कारः ।

अब ऋग्वेदोक्त पंचसंस्कारोंका वर्णन करते हैं ।

प्रथम मुद्राविधि वर्णित होती है । श्रीरामजीकी पूजाके मध्यमें मुद्रा धारण करनी चाहिये, जो व्यक्ति श्रीरामको प्रणाम कर पंच तत्वसे मुद्रा धारण करता है, वह श्रीरामका अनुचर होता है । ऋग्वेदोक्त प्रथम संस्कार समाप्त ।

ॐ यौ वै लोकपावनीं तुलसीकाष्ठजां मालिकां कण्ठे धारयति स जीवन्मुक्तो भवति ॥ इति ऋ० द्वितीयः संस्कारः ॥

जो सज्जन समस्त लोकोंको पवित्र करनेवाली तुलसीके काष्ठसे बनी हुई मालाको अपने कंठमें धारण करता है, वह जीवनमुक्त हो जाता है ऋग्वेदोक्त द्वितीय संस्कार समाप्त ।

ॐ यौऽसौ गोपीचन्दनवेणुपत्राकारमूर्ध्वपुण्ड्र तिलकं द्वादशपञ्च यथासंख्यमात्मना निर्धारयति शंखचक्रांकितवस्त्राणि च स श्रीरामस्यानु-

चरो भवति स्मरते ततो भवति ॥ इति ऋ० तृतीयः संस्कारः ॥

जो मनुष्य गोपीचन्दनसे वेणुपत्रकके आकारका ऊर्ध्व पुण्ड्र तिलक एवं द्वादश अथवा पांच तिलक अपने अंगमें, और शंख चक्र युक्त वस्त्रोंको धारण करता है, वह रामका अनुचर होता है। ऋग्वेदोक्त तृतीय संस्कार समाप्त।

ॐ रां रीं रं रैं रौं रः ॥ ॐ योऽहं स सोहं परमात्मानं स्मरते स महीयान्स परात्परे लोके पूज्यो भवति ॥ इति ऋ० चतुर्थः संस्कारः ॥

"ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः" इस बीजमन्त्रसे जो मनुष्य जो मैं हूं वहीं वह है इस प्रकार परमात्माका स्मरण करता है वही महान् पुरुष है और लोकमें सबसे अधिक पूज्य भी वही है। ऋग्वेदोक्त चतुर्थ संस्कार समाप्त।

॥ ॐ योऽसौ नासाग्रे परमात्मानं सत्यं नित्यं जपति ध्यानविशेषो भवति श्रीरामं संध्यायति स महात्मा भवति श्रीरामे सदा मतिर्भवति ॥ इति ऋ० पंचमः संस्कारः ॥

जो पुरुष नासिकाके अग्रभागमें नित्य सत्य स्वरूप परमात्माका जप करता और विशेष ध्यानपूर्वक श्रीरामका ध्यान करता है वह महात्मा होता है और सदा श्रीराममें उसकी मति होती है ऋग्वेदोक्त पंचम संस्कार समाप्त।

तथा चागमे

उद्यतो बत सुहृदः पुरुष स जीवन्मुक्तो भवति ॥ परमात्मने स प्रियो भवति कृत्यकृत्यो भवति ॥ इति ऋ० पंचसंस्कारान् कथितान् धृतवान्महत्पुरुषः परार्थपरमतत्त्वं सैव परं धाम नित्यं प्राप्नोति तरणतारणो भवति ॥ इति ऋग्वेदे श्रेष्ठागमे परिचायाग्नीये ॥

शास्त्रोंमेंभी ऐसाही लिखा है—जो विचारवान् पुरुष संस्कारोंसे युक्त है वही जीवनमुक्त, परमात्माको प्रिय और कृतकृत्य होता है। जो पुरुष ऋग्वेदोक्त पंच संस्कारोंको धारण करता है उसीको परमधामकी प्राप्ति होती है; और वह तरण तारण होताहै। ऋग्वेदश्रेष्ठागम पारिचायाग्नीयमें ऐसा लिखा है।

पुण्ड्रं मुद्रा तथा नाम माला मन्त्रश्च पंचमः ॥ अमीहि पंचसंस्काराः पारमैकान्त्यहेतवः ॥ इति ऋग्वेद पंच संस्काराः ॥ १ ॥

ऊर्ध्वपुण्ड्र रामनाम माला और मंत्र ये पांचो संस्कार मोक्षपद देनेवाले हैं। ऋग्वेदोक्त पंच संस्कार समाप्त ॥ १ ॥

अथ सामवेदे पंच संस्काराः

अथ पंचसंस्कारानतुभावयेत् ॥ ॐ श्रीकृष्ण नामांकितमुद्रां पावनीं य आत्मनो निर्द्धारयति शंखचक्रांकितवस्त्राणि च सपुण्यवान् श्रीकृष्ण

स्यानुचरो भवति ॥ इति सा० प्रथमः संस्कारः॥

अब सामवेदोक्त पंच संस्कारोंका वर्णन करते हैं कि, पंच संस्कारोंकी अनुभावना करनी चाहिये। जो मनुष्य श्रीकृष्णके नामकी चिह्नित पवित्र करनेवाली मुद्राको अपने अंगमें धारण करता है, एवं शंखचक्रांकित वस्त्रोंको पहरता है, वह पुण्यात्मा श्रीकृष्णका अनुचर होता है। सामवेदोक्त प्रथम संस्कार समाप्त।

ॐ यो वै लोकपावनीं तुलसीकाष्ठजा मालिका कंठे निर्धारयति स जीवन्मुक्तो भवति स लोके पावनो भवति ॥ इति सा० द्वितीयः संस्कारः ॥

सब लोकोंको पवित्र करनेवाली तुलसीके काष्ठकी मालाको जो मनुष्य कंठमें धारण करता है, वह लोकमें पवित्र और जीवन्मुक्त होता है। सामवेदोक्त द्वितीय संस्कार समाप्त।

ॐ योऽसौ गोपीचन्दनेन वेणुपत्राकारमूर्ध्वं-पुण्ड्रं नासिकार्द्धकेशपर्य्यन्तं तिलकं द्वादशं पंचमं वा स्वात्मनो निर्धारयति स पुण्यवान् श्रीकृष्ण-स्यानुचरो भवति स लोके पूज्यो भवति ॥ इति सा० तृतीयः संस्कारः ॥

जो मनुष्य गोपीचन्दनसे वेणुपत्रके आकारका ऊर्ध्व पुंड्र तिलक नाशिकाके अर्धभागसे केशपर्य्यन्त धारण करता अथवा द्वादश वा पंच तिलक अपने देहमें लगाता है वह पुण्यात्मा श्रीकृष्णका अनुचर होता है। और सब लोकमें उसकी पूजा होती है। सामवेदोक्त तृतीय संस्कार समाप्त।

ॐ योऽसौ परमात्मनः श्रीकृष्णस्य नामस्व-रेण मंत्रेण सदा हृदिस्थं परात्परं ध्यायति स याति महतो महीयान् स त्रैलोक्ये पूज्यो भवति॥ इति सा० चतुर्थः संस्कारः ॥

जो व्यक्ति श्रीकृष्णपरमात्माके नामको स्वर

और मन्त्रसे सदा अपने हृदयमें धारण करता है एवं परमात्माका ध्यान करता है वह पूज्योंकाभी पूज्य होता है अतएव तीनों लोकमें उसकी पूजा होती है। सामवेदोक्त चतुर्थ संस्कार समाप्त।

ॐ योऽसौ नामयज्ञेन परमात्मानं स्वरेण नित्यं जपति ध्यानावस्थितः श्रीकृष्णं यो ध्यायति स महत्पुरुषो महतो महीयान् स नित्यं गोविंदस्य सदृशः ॥ इति सा० पंचमः संस्कारः ॥

जो भगवद्भक्त नाम यज्ञके द्वारा स्वरसे परमात्माका जप करता है। ध्यानावस्थित हो जो श्रीकृष्णका ध्यान करता है वह महान् पुरुष पूज्योंकाभी पूज्य और नित्य गोविंदके सदृश होता है। सामवेदोक्त पंच संस्कार समाप्त।

ॐ योऽसौ पंच संस्कारान् धृतवान् स मह-त्पुरुषः स जीवन्मुक्तः परमात्मनः स प्रियो भवति तस्य दर्शनात्पावनो भवति सामवेदे कथितानि

संस्काराणि धृतवान् परमार्थपरायणः स वै परमधामनित्यरूपो भवति तरणतारणो भवति ॥ इति सामवेदे षट्परीक्षास्तथाहिचागमे ॥ पुण्ड्रं मुद्रास्तथा नाम माला मंत्रश्च पंचमः ॥ अमी हि पंच संस्काराः पारमैकान्त्यहेतवः ॥ इति सामवेदे पंच संस्कारः ॥ २ ॥

जो पांच संस्कारोंको धारण करता है वह महान् पुरुष जीवन्मुक्त होता है,परमात्मा उसे प्यार करता और सकल संसार उसके दर्शनसे पवित्र हो जाता है । सामवेदमें कहे हुए संस्कारोंको धारण कर परमात्मामें मन लगाता है वह नित्यपरमतेजःस्वरूप होता है, वह स्वयं तरता और दूसरोंको तार देताहै।यह सामवेदमें षट् परीक्षा है,ऐसाही आगममेंभी वर्णित हुआ है. ऊर्ध्वपुंड्र मुद्रा नाम माला और मन्त्र ये पांचों संस्कार मोक्ष देनेवाले हैं । सामवेदोक्त पंच संस्कार समाप्त ॥ २ ॥

अथ यजुर्वेदे पंच संस्काराः

संप्रदायानुसारेण यथाक्रमं प्रदर्श्यंते ॥ प्रथमं च यजुर्वेदे हिरण्यकेशिशाखायां ऊर्ध्वपुंड्रं हरिपादाकृति आत्मनो निर्धारयति मध्यच्छिद्रमूर्ध्वपुंड्रं यो धारयति स परस्य प्रियो भवति स पुण्यवान् स मुक्तिभाग्भवति ॥ इति य० प्रथमः संस्कारः॥

अब यजुर्वेदोक्त पंच संस्कारोंका वर्णन करते हैं । संप्रदायके अनुसार क्रमसे उनका प्रदर्शन करते हैं,प्रथम यजुर्वेद हिरण्यकेशिशाखामें लिखा है,जो मनुष्य नारायणके चरणोंकी आकृतिके उर्ध्वपुण्ड्रको अथवा मध्यमें छिद्रसहित ऊर्ध्वपुण्ड्रको अपने अंगमें धारण करता है उसे सब प्यार करते हैं,और वही पुण्यात्मा मुक्तिभागी होता है । यजुर्वेदोक्त प्रथम संस्कार समाप्त ।

धृतोर्ध्वपुंड्रोदरचक्रधारी विष्णुं परं ध्यायति यो महात्मा स्वरेण मन्त्रेण सदा हृदि स्थितं परात्परं स याति महतो महीयान् ॥ इति य० द्वितीयः संस्कारः ॥

जो सज्जन उदरमें चक्र एवं अंगमें ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण कर स्वरमंत्रद्वारा हृदयस्थित विष्णुभगवान्का ध्यान करता है वह सबमें बडा हो जाता है । यजुर्वेदोक्त द्वितीय संस्कार समाप्त ।

पशुपुत्रादिकान्सर्वान् गृहोपकरणानि च ॥ अंकयेत् शंखचक्राभ्यां नामकुर्याच्च वैष्णवम् ॥ इति य० तृतीयः संस्कारः ॥

पशु पुत्रादि सब गृहस्थके साधनोंके ऊपर शंख चक्रका चिन्ह लगाके उनके नामभी विष्णुसंबंधी रक्खे । यजुर्वेदोक्त तृतीय संस्कार समाप्त ।

ॐ रां रामाय नमः इति मंत्रम् ॥ अथर्ववेदे रामतापनीयोपनिषदि चतुर्थः संस्कारः ॥

"ॐ रां रामाय नमः" यह मंत्र है। अथर्ववेदोक्त रामतापनीय उपनिषदमें चतुर्थ संस्कार समाप्त ।

शंखचक्रधरो विद्वान्मालां तुलसिजां धृतः ॥ सजीवन्मुक्तः इति य० पंचमः संस्कारः ॥

शंख चक्र और तुलसीकी माला धारण करनेवाला विद्वान् जीवन्मुक्त होता है । यजुर्वेदोक्त पंचम संस्कार समाप्त ।

तथाचागमे

पुंड्रं मुद्रा तथा नाम मन्त्रो यागश्च पंचमम् ॥ अमीहि पंचसंस्काराः पारमैकांत्यहेतवः ॥ इति य० पंचसंस्कारसंस्कृतो यः स वैष्णवः नान्यथेति भावः स रामस्य दासो भवति दासोऽहमस्मि यो यं स्मरेत् स तद्रूपो भवति कीटभृंगन्यायेन स्वस्वरूपस्मरणात् तरति शोकमात्मविद्ब्रह्मैव भवति॥ अथ तुलसी भगवतोर्भेदाभावे यागस्थाने

तुलसीधारणं न विरोधः ॥ इति य० पंचसंस्कारः ॥ ३ ॥

आगममें भी ऐसाही लिखा है-ऊर्ध्वपुण्ड्र मुद्रा नाम मन्त्र और याग ये पांचों संस्कार धारण करनेसे मुक्ति होती है। इस प्रकार यजुर्वेदोक्त पंच संस्कारोंसे जो मनुष्य संस्कृत है वही यथार्थ वैष्णव है इसमें अन्यथा नहीं, वह रामका दास होता है 'मैं दासहूं' यों कहकर जो मनुष्य जिसका ध्यान करता है कीटभृंगन्यायसे वह तद्रूप होता है आत्मज्ञानी शोकसे तरता है, ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मस्वरूपही होता है। अब तुलसी और भगवान्‌के भेदका अभाव होनेसे यागस्थानमें तुलसी धारण करनेका विरोध नहीं है।यजुर्वेदोक्त पंच संस्कार समाप्त॥ ३॥

अथ अथर्ववेदे पंचसंस्कारः

संप्रदायानुसारेण यथाक्रमं प्रदर्श्यंते ॥ प्रथमं

अथर्ववेदे आरक्तकेशिशाखायां ॥ ॐ हरिपादाकृतिं यो धारयति स महात्मा विष्णुप्रियो भवति इति अ० प्रथमः संस्कारः ॥

अब अथर्ववेदोक्त पंच संस्कारोंका वर्णन करते हैं, संप्रदायके अनुसार क्रमसे दिखलाते हैं-प्रथम अथर्ववेद आरक्तकेशिशाखामें लिखा है-जो महात्मा नारायणके चरणचिह्नको धारण करता है विष्णुभगवान् उससे प्रेम करते हैं। अथर्ववेदोक्त प्रथम संस्कार समाप्त।

ॐ ऊर्ध्वपुंड्रं मस्तके धारयति स महात्मा दंडकमंडलु धौतवस्त्रं पवित्रं हृदये भक्तिं गुरुवाक्यं च धारयति स जीवन्मुक्तो भवति ॥ इति अ० द्वितीय संस्कारः ॥

जो महात्मा मस्तकके ऊपर ऊर्ध्वपुंड्र दंडकमंडलु धौतवस्त्र पवित्री हृदयमें भक्ति और गुरुवाक्यको धारण

करता है वह जीवन्मुक्त होता है अथर्ववेदोक्त द्वितीय संस्कार समाप्त ।

ॐ रामकृष्णहरिरितिषडक्षरमंत्रः॥ इति अ० तृतीयः संस्कारः ॥

"ॐ राम कृष्ण हरिः" यह षडक्षर मंत्र है। अथर्ववेदोक्त तृतीय संस्कार समाप्त ।

ॐ गंगास्नानं गंगोदकं रक्षावृत्तधारी इहाचार्य्यवान् निर्लोभी कंदमूलफलहारः स त्रैलोक्ये पूज्यो भवति ॥ इति अ० चतुर्थः संस्कारः ॥

जो मनुष्य गंगास्नान कर गंगाजल और रक्षावृत्तको धारण करता है, सदाचारसे रहता है, एवं लोभपरित्याग पूर्वक कन्द मूल फलका भोजन करता है त्रिलोकीमें उसकी पूजा होती है । अथर्ववेदोक्त चतुर्थ संस्कार समाप्त ।

ॐ सोहं हंसतत्वमसीति महावाक्य मंत्रं शुक्लवर्णं गर्गऋषिमाधवाचार्य्यैः ॥ सहविष्णुस्मरणं स्वाहा ॥ इति अ० पंचमः संस्कारः ॥

मैं वह हूँ, औ वह मैं हूँ, तत्वमसि महावाक्यके मन्त्रको एवं गर्गऋषि तथा माधवाचार्यके साथ शुक्लवर्ण विष्णुका स्मरण करे।अथर्ववेदोक्त पंचम संस्कार समाप्त।

तथाचागमे

ॐ पुंड्रं मुद्रा तथा नाम माला मंत्रस्तु पंचमः ॥ अमी हि पंचसंस्काराः पारमैकांत्यहेतवः ॥ इति अथर्ववेदे पंचसंस्कारः ।

ऐसाही आगममें लिखा है । ऊर्ध्वपुण्ड्र मुद्रा नाम माला मन्त्र ये पाचों संस्कार मोक्ष देनेवाले हैं । इस प्रकार अथर्ववेदमें पंच संस्कार वर्णित हैं, केवल श्रीधारण करनेका निषेध है ।

केवल श्रीधारणनिषेधः

श्रियमेकं तु यः कुर्यात् द्विरेखातिलकं विना ॥
तस्य लक्ष्मीर्भवेद्रुष्टाधर्मोपि च विनश्यति ॥ १ ॥

जो मनुष्य तिलककी दो रेखाओंका परित्याग करके केवल एक श्रीमात्रही धारण करता है, लक्ष्मीजी उससे रुष्ट हो जाती हैं एवं उसके धर्मकाभी विनाश हो जाता है ॥ १ ॥

तिलकहीनपूजननिषेधः

श्रीतिलकहीनस्तु यः पूजयति केशवम् ॥
निष्फलं पूजनं तस्य स संध्यावंदनादिकम् ॥२॥

जो मनुष्य श्रीसहित तिलक विनाही लगाये केशवकी पूजा करता है उसकी पूजा औरसंध्यावन्दन आदि सब क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं ॥ २ ॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन तिलकं च श्रिया युतम् ॥
कर्त्तव्यं सर्वदा भक्तैः सुखसौभाग्यमीप्सुभिः ॥३॥

अतएव जो भक्तजन सुख सौभाग्यप्राप्तिकी अभिलाषा करते हों उन्हें विशेष यत्नपूर्वक श्रीसहित तिलक नित्यही लगाना चाहिये ॥ ३ ॥

इति वेदोक्त संस्काराः

इति श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्य्यकृत भाषानुवादसहित
वेदोक्तसंस्कार सम्पूर्ण

श्रीरस्तु शुभमस्तु कल्याणमस्तु

पुस्तकें मिलने के स्थान

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई-४००.००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

